एम. ए. (हिन्दी)

सत्र - IV (CBCS)

प्रश्नपत्र क्र. १४.१

तुलनात्मक साहित्य (सैद्धांतिक)

(COMPARATIVE STUDY - THEORATICAL)

पेपर कोड - 91752

© UNIVERSITY OF MUMBAI

प्रा. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
प्रभारी कुलगुरू,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्रा. डॉ. अजय भामरे
प्रभारी प्र-कुलगुरू,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्रा. प्रकाश महानवर
संचालक,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्रकल्प समन्वयक : **प्रा. अनिल बनकर**
सहयोगी प्राध्यापक, इतिहास विभाग व प्रमुख, मानव्य विद्याशाखा,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

अभ्यास समन्वयक एवं संपादक : **डॉ. संध्या शिवराम गर्जे**
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), दूर व मुक्त अध्ययन संस्था (IDOL),
मुंबई विश्वविद्यालय, कलिना, सांताक्रुज (ई), मुंबई-४०० ०९८.

लेखक : **डॉ. सावित्री ढ़ोले**
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
जे. व्ही. एस. डिग्री महाविद्यालय, ऐरोली, नवी मुंबई, महाराष्ट्र.

: **डॉ. एस. टी. आवटे**
प्रमुख हिन्दी विभाग,
एच. आर. एम. महाविद्यालय, कुडाळ, जि. सिंधुदुर्ग.

: **डॉ. महात्मा पाण्डेय**
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
साठे महाविद्यालय, दीक्षित रोड, विलेपार्ले (पू.), मुंबई -४०० ०५७.

: **डॉ. अजीत कुमार राय**
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
के. सी. महाविद्यालय, चर्चगेट, मुंबई.

नोव्हेंबर २०२२, प्रथम मुद्रण

प्रकाशक
संचालक,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई - ४०००९८.

अक्षरजुळणी
मुंबई विद्यापीठ मुद्रणालय,
सांताक्रुझ, मुंबई.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्रमांक
१.	तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप	१
२.	तुलनात्मक अध्ययन के तत्व तुलनात्मक साहित्य के प्रमुख स्कूल	१४
३.	तुलनात्मक अध्ययन के सिद्धान्त	२५
४.	तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि एवं प्रभाव	३८

*****

Semester - IV(चतुर्थ सत्र)
Course Code : PAHIN 114.1

प्रश्न पत्र -१४.१

तुलनात्मक साहित्य (सैद्धांतिक)
Comparative Study – Theoratical

कुल श्रेयांक **(Credit)= 6**

इकाई एक **श्रेयांक - १**

१. तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप

  १.१. अर्थ, परिभाषा एवं व्युत्पत्ति

  १.२. तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन की परंपरा

    १.२.१. भारतीय

    १.२.२. पाश्चात्य

इकाई दो **श्रेयांक - १**

२.१. तुलनात्मक अध्ययन के तत्व

२.२. तुलनात्मक साहित्य के प्रमुख स्कूल

इकाई तीन **श्रेयांक - २**

३. तुलनात्मक अध्ययन के सिद्धांत

  ३.१. तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन के प्रतिमान

  ३.२. तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता एवं महत्त्व

  ३.३. तुलनात्मक अध्ययन की समस्याएँ

  ३.४. तुलनात्मक साहित्य के मूल्य

इकाई चार **श्रेयांक - २**

४. तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि एवं प्रभाव

  ४.१. तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि

  ४.२. तुलनात्मक अध्ययन की दिशाएँ

  ४.३. तुलनात्मक साहित्य में कथ्य-मीमांसा

  ४.४. तुलनात्मक साहित्य में रूप एवं शिल्प-मीमांसा

  ४.५. तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन का प्रभाव-क्षेत्र

संदर्भ ग्रंथ : (प्रश्न पत्र १४.१)

१. तुलनात्मक साहित्य का विश्वकोष - सं. डॉ. `पांडेय' शशिभूषण `शीतांशु'
२. तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि - डॉ. इंदुनाथ चौधरी
३. साहित्य-दर्शन - आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री
४. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका - डॉ. इंदुनाथ चौधरी
५. तुलनात्मक साहित्य : नये सिद्धांत और उपयोजन - आनंद पाटील (अनु. चंद्रलेखा)
६. तुलनात्मक भारतीय साहित्य : अवधारणा और मूल्य - प्रो. ऋषभदेव शर्मा
७. भारतीय साहित्य की भूमिका - डॉ. रामविलास शर्मा
८. परंपरा का मूल्यांकन - डॉ. रामविलास शर्मा
९. भारत : इतिहास और संस्कृति - गजानन माधव मुक्तिबोध
१०. भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ - के. सच्चिदानंद
११. आधुनिक साहित्य - नंददुलारे वाजपेयी

१

तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

१.० इकाई का उद्देश्य

१.१ प्रस्तावना

१.२ तुलनात्मक साहित्य का अर्थ

१.३ तुलनात्मक साहित्य की व्युत्पत्ति

१.३.१ तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा

१.३.२ तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप

१.४ तुलनात्मक साहित्य का प्रारंभ

१.४.१ तुलनात्मक साहित्य - भारतीय परम्परा

१.४.२ तुलनात्मक साहित्य - पाश्चात्य परम्परा

१.४.२.१ फ्रेंच

१.४.२.२ जर्मन

१.४.२.३ अमेरिकन (यू.एस.)

१.५ तुलनात्मक साहित्य वर्तमान संदर्भ में

१.६ सारांश

१.७ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१.८ लघुत्तरीय प्रश्न

१.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१.१० संदर्भ ग्रंथ

१.० इकाई का उद्देश्य

१. इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप तुलनात्मक साहित्य के अर्थ, स्वरूप और व्युत्पत्ति को समझेंगे।

२. भारतीय तुलनात्मक साहित्य की परम्परा को समझ पायेंगे।

३. पाश्चात्य तुलनात्मक साहित्य की परम्परा को समझ पायेंगे।

४. तुलनात्मक साहित्य का आधुनिक समय में महत्व से अवगत हो पायेंगे।

१.१ प्रस्तावना

साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का विस्तार आधुनिक युग में हुआ । तुलनात्मक अध्ययन पद्धति बहुत ही कम समय में साहित्य की प्रचलित पद्धति बन गई है । इस अध्ययन पद्धति द्वारा साहित्य की आन्तरिक और बाहरी गतिविधियों में प्रगति हुई है । भाषागत शिक्षण की ओर पाठकों का कल बढ़ा है । एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में अन्तर, तुलना आदि जानकारी मिलने में मदद होती है ।

१.२ तुलनात्मक साहित्य का अर्थ

अर्थ:

तुलनात्मक साहित्य (Comparative literature) वह विद्या शाखा है जिसमें दो या दो से अधिक भिन्न भाषाओं, राष्ट्रीय या साँस्कृतिक समूहों के साहित्य का अध्ययन किया जाता है । साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन विश्व के मानव समाज को समझने के लिए व्यापक दृष्टि देता है । तुलनात्मक साहित्य राष्ट्रीय, भौगोलिक और अनुशासनात्मक सीमाओं के पार साहित्य और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अध्ययन से सम्बन्ध रखता है । तुलनात्मक साहित्य अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं और कलात्मक परंपराओं को समझने में मदद करता है, ताकि विभिन्न देशों की संस्कृतियों को 'अंदर से' समझा जा सके ।

तुलनात्मक साहित्य के साहित्यिक अध्ययन के अन्य रूपों के विपरीत, तुलनात्मक साहित्य अर्थव्यवस्था, राजनीतिक गतिशीलता, सांस्कृतिक आंदोलनों, ऐतिहासिक बदलाव, धार्मिक अंतर, शहरी वातावरण, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, सार्वजनिक नीति के भीतर सामाजिक और सांस्कृतिक उत्पादन के अंतः विषय विश्लेषण पर जोर देता है ।

हेनरी एच. एच. रेमाक ने तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा इस प्रकार दी है- “ तुलनात्मक साहित्य एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विविध क्षेत्रों के आपसी सम्बन्धों का भी अध्ययन है ।” तुलना मानव की सहज प्रवृत्ति है । तुलना मनुष्य के विकसित मस्तिष्क की जिज्ञासा से उत्पन्न हुई ज्ञान-यात्रा है । मानक हिंदी कोश में ‘तुलना’ शब्द के अर्थ दिए हैं- ‘‘(काँटे, तराजू आदि पर रखकर तौला जाना।) अथवा दो या अधिक वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक-दूसरे से तारतम्य, बराबरी, समता, उपमा या गिनती करने को कहा जा सकता है ’’। उसी प्रकार ‘तुलनात्मक’ शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखा है - ‘‘जिसमें दो या कई चीजों के गुणों की समानता और असमानता दिखलाई गई हो । जिसमें किसी के साथ तुलना करते हुए विचार किया गया हो ।

१.३ तुलनात्मक साहित्य की व्युत्पत्ति

तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के कंपैरेटिव लिटरेचर का हिंदी अनुवाद है । एक स्वतंत्र विद्या शाखा के रूप में देश-विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में इसके अध्ययन- अध्यापन के कार्य को आजकल विशेष महत्व दिया जा रहा है । अंग्रेजी के कवि मैथ्यू अर्नाल्ड ने सन १८४८ में अपने एक पत्र में सबसे पहले कंपैरेटिव लिटरेचर वाक्य का प्रयोग किया था ।

भारत में वर्ष १९०७ में रवीन्द्रनाथ टेगौर ने विश्व साहित्य का उल्लेख करते हुए साहित्य के अध्ययन में तुलनात्मक दृष्टि की आवश्यकता पर ज़ोर दिया था तथा मानव इतिहास की साँस्कृतिक धारा के सहज अध्ययन और विकास के लिए तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन पर बल दिया।

तुलनात्मक साहित्य के विषय में एक स्वतंत्र अध्ययन को मान्यता देना आज भी विवाद ग्रस्त विषय है। तुलनात्मक साहित्य का भी एक दृष्टिकोण है। एक प्रवृत्ति और एक तकनीकि है।

तुलनात्मक साहित्य, एकल साहित्य (सिंगल लिटरेचर) के अध्ययन से अलग है। एक साहित्य का अध्ययन जहां साहित्य के सीमित अध्ययन के दिशा की ओर संकेत करता है, वहीं तुलनात्मक साहित्य में साहित्य के व्यापक अध्ययन की दिशा की ओर ले जाता है। यहाँ तुलना इस बात की नहीं होती कि कौनसा साहित्यकार श्रेष्ठ है बल्कि तुलना इस बात की होती है कि दोनों साहित्यकारों में समानता और भिन्नता के बिंदु कौन-कौन से हैं ? कहाँ भाव-संवेदना- विचार- कला एक दूसरे के साथ मिलते हैं और कहां अलग हैं। एक दूसरे को पहचानना तथा स्वीकारने की दिशा में पाठक को ले जाते हैं वर्तमान समय में इसकी विशेष आवश्यकता है।

परंतु प्रारंभ में ही इसके शाब्दिक अर्थ को लेकर विवाद रहा क्योंकि साहित्य एक कहानीकार, कवि आदि की सृजनशील कलात्मक अभिव्यक्ति है तो वह किसी तरह भी तुलनात्मक नहीं हो सकता है। साहित्य सृजन की प्रक्रिया अपने आप में परिपूर्ण होती है और एक साहित्य सृष्टि में कहीं दूसरे साहित्य के साथ तुलना उनके साहित्य में अभिव्यक्त युगीन संदर्भ, समाज, इतिहास आदि की तुलना की जा सकती है।

जैसे-कबीर और नानक का तुलनात्मक अध्ययन।'' 'अध्ययन' के बारे में स्पष्ट किया है- ''किसी विषय के सब अंगों या गूढ़ तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे देखना, समझना तथा पढ़ना।'' इन शब्दों को ज्ञात करने पर तुलना का सरल एवं व्यावहारिक अर्थ है- किन्हीं दो वस्तुओं या व्यक्तियों का कतिपय समान गुणों के आधार पर पूर्णतया जानने के लिए परीक्षण या तुलना करना।

तुलना शब्द उपरोक्त सरल अर्थ से हटकर शोध के क्षेत्र में एक विशिष्ट, निश्चित एवं संकुचित अर्थवाची हो गया है। इसे भाषा-विज्ञान में अर्थ संकोच कहा जाता है। तुलना करते समय किन्हीं दो वस्तुओं में शत प्रतिशत तुलना-समानता संभव नहीं है अत: तुलना में कुछ विषमता, असमानता एवं विपरीतता भी सहज आती है। वैषम्यमूलक अध्ययन भी तुलनात्मक अध्ययन का एक अंग है।

तुलनात्मक अध्ययन के अंतर्गत किन्हीं दो समकालीन या विषमकालीन समान गुणात्मक प्रतीत होनेवाली कृतियों का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन दो युगों, दो भाषाओं एवं दो व्यक्तियों का हो सकता है। यह अध्ययन गंभीर, वैज्ञानिक, तटस्थ, सांगोपांग एवं निष्कर्षमूलक होना चाहिए।

१.३.१ तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा:

अनुसंधान के समान तुलनात्मक साहित्य तथा तुलनात्मक अनुसंधान पश्चिमी साहित्य से लिया गया है। तुलनात्मक अध्ययन को अनके पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने परिभाषित करने की कोशिश इस प्रकार की है-

विश्वकोशात्मक ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में तुलना के विषय में लिखा है:

"तुलना, किन्हीं दो वस्तुओं में समान गुणों एवं अंतरों का उद्घाटन या प्रस्तुतीकरण अथवा इन्हीं विशेषताओं का संयोजन है। तुलना कभी-कभी आरंभ में संभावनापूर्ण लग सकती है। पर अंतत: उससे कुछ भी सिद्ध न हो सके, यह भी होता है।" उपर्युक्त परिभाषा तुलना-प्रक्रिया को स्पष्ट करती है। तुलना में वस्तुओं का समता-विषमता मिलना निश्चित नहीं मानती।

प्रसिद्ध विश्वकोशकार वेबस्टर ने तुलना के अर्थ और आशय को बहुत विश्वसनीय ढंग से स्पष्ट किया है:

"दो या दो से अधिक वस्तुओं के समान एवं असमान तत्वों को ज्ञात करने के लिए उन्हें साथ रखकर परिक्षित करना। दो वस्तुओं की असमानता की मात्रा का पता लगाने के लिए भी तुलना की जाती है। दो वस्तुओं के साम्य-वैषम्य की निष्पक्ष जाँच के लिए तथा निष्कर्ष प्राप्ति के लिए भी तुलना की जाती है।"

रेने वेलेक पासनेट के अनुसार, "साहित्यिक विकास के सामान्य सिद्धांतो का अध्ययन निश्चय ही तुलनात्मक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है।"

पैरिस जर्मन स्कूल के अनुसार, "तुलनात्मक साहित्य विविध साहित्यों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन है अथवा अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक संबंधो का इतिहास है या फिर वह साहित्येतिहास की एक शाखा है।"

डॉ. नगेंद्र तुलनात्मक साहित्य को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं:

"तुलनात्मक साहित्य जैसे नाम से ही स्पष्ट है साहित्य का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत करना है। तुलनात्मक साहित्य एक प्रकार का साहित्यिक अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलता है और जिसका उद्देश्य होता है, अनेकता में एकता का संधान।"

वसंत बापट के अनुसार, "तुलना को अधिक व्याख्यायित करना हो तो साधर्म्य और वैधर्म्य, उद्गम और प्रभाव इन चार दृष्टियों से किया गया शोध, ऐसा कहना होगा।" बापट जी की परिभाषा शोध की प्रक्रिया एवं अंगो की आरे इंगित करती है। तुलना में आधारभूत बातें कौन-सी हैं उनको स्पष्ट करती हैं।"

डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति तुलना के बारे में लिखते हैं:

"तुलनात्मक अनुसंधान विभिन्न भाषा-साहित्यों की कृतियों एवं स्थितियों का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करता हुआ, विभिन्न भाषाओं एवं क्षेत्रों में ध्वनित मानव जाति के हृदय एवं

मस्तिष्क में परिलक्षित भाव साम्य का समुद्घाटन कर विश्व-मानवता की एकता का निरूपम-विश्लेषण करता है।" कृष्णमूर्ति जी की परिभाषा तुलना के एक उद्देश्य को स्पष्ट करनेवाली है। तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से विश्वमानव की एकता स्पष्ट होनी चाहिए, इस पर बल देती है।

उपर्युक्त परिभाषा में साम्य और वैषम्य पर अधिक बल दिया है। इसमें तुलना वस्तुओं से तात्पर्य दो कृतियों, लेखकों, साहित्यिक प्रवृत्तियों, विचार प्रणालियों आदि का साम्य-वैषम्य निहित है।

१.३.२ तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप:

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप स्पष्ट होता है। तुलनात्मक साहित्य साहित्यिक समस्याओं का वह अध्ययन है, जहाँ एक से अधिक साहित्यों का उपयोग किया जाता है। तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में प्रत्येक अध्याय या पृष्ठ में तुलनात्मक होने की आवश्यकता नहीं पर उसकी दृष्टि, उद्देश्य तथा कार्यान्वयन को तुलनात्मक होना चाहिए। यहाँ एक से अधिक से तात्पर्य एक से अधिक भाषाओं, रचनाकारों, कृतियों, युगों, प्रवृत्तियो से है। तुलनात्मक साहित्य में समता- विषमता का उद्घाटन कर अध्ययन कर्ता को दोनों विषयों की पूर्ण प्रकृति और सीमाओं का पूर्ण ज्ञान हो जाता है। तुलनात्मक अध्ययन की पूर्णता तथा वैज्ञानिकता के लिए कृतियों पर पड़े प्रभावों एवं साम्य-वैषम्य के कारणों की खोज करनी पड़ती है। तुलनात्मक साहित्य के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि-

तुलनात्मक साहित्य, साहित्य को राष्ट्रीय तथा भाषिक सीमाओं से परे, उस समग्र रूप में ग्रहण करता है। यह साहित्य के बाह्य रूपों को महत्व न देकर उसके आंतरिक तत्त्वों को ही रेखांकित करता है। तुलनात्मक साहित्य अनेकता में एकता की भावना से प्रेरित, मानव संस्कृति की एक्यता तथा अनेक साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन से जुड़ा हुआ है।

१.४ तुलनात्मक साहित्य का प्रारम्भ

किसी भी विधा या पद्धति के प्रारंभ एवं विकास के अध्ययन से उसके इतिहास का पता चलता है। जिससे अध्ययन में स्पष्टता एवं वास्तविकता आ जाती है। कल, आज और कल का पता चलता है। तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' का हिंदी अनुवाद है। "इस पद का प्रथम प्रयोग अंग्रेजी के मैथ्यू आर्नल्ड ने सन् १८४८ में अपने एक पत्र में किया था।"

प्रारंभ में इसके शाब्दिक अर्थ को लेकर विवाद रहा क्योंकि साहित्य विधा कलाकार की सृजनशील अभिव्यक्ति होती है, फिर वह तुलनात्मक कैसे हो सकती है? अत: 'तुलनात्मक शब्द' साहित्य सृष्टि के संदर्भ में प्रयोग में नहीं लाया जा सकता। 'ऐतिहासिक अर्थविज्ञान' के सहारे रेने वेलेक ने इस समस्या को हल करने का प्रयास किया।

उनके अनुसार, "तुलनात्मक शब्द में तुलना करने की प्रक्रिया जुडी हुई है और तुलना में वस्तुओ को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उनमें साम्य या वैषम्य का पता लग सके।" इसी दृष्टि से अंग्रेजी में तुलनात्मक शब्द का प्रयोग लगभग सन् १५९८ ई. से हो

रहा है। तत्पश्चात सन् १८८६ ई. में अपनी किताब का शीर्षक 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' रखकर सर्वप्रथम एच. एम. पॉसनेट ने इसे विद्याशाखा को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास किया था।

इन बातों से यह अवश्य स्पष्ट होता है कि बीसवीं सदी के प्रारंभ से 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' पद का प्रयोग शुरू हो गया था।

भारत में सन् १९०७ ई. में रवींद्रनाथ ठाकुर ने 'विश्व साहित्य' का उल्लेख करते हुए साहित्य के अध्ययन में तुलनात्मक दृष्टि की आवश्यकता पर जोर दिया था। भारत में तुलनात्मक अध्ययन के प्रारंभ के संबंध में ए. बी. साई प्रसाद ने कहा है, ''बीसवी सदी से ही हम तुलना शब्द को कम्पैरेटिव शब्द का पर्यायवाची शब्द मान इस्तेमाल करते आ रहे हैं। इसके पहले यह शब्द भारत में प्रचलित नहीं था।''

१.४.१ तुलनात्मक साहित्य - भारतीय परम्परा:

प्रत्येक भाषा एवं साहित्य की अपनी भाषिक प्रकृति होती है। तुलनात्मक अध्ययन करते समय उसके शब्द, वाक्य, पद, व्यंजना, अलंकार, प्रादेशिक छवियों आदि का उद्घाटन होता है। दोनों भाषाओं के साम्य-वैषम्य से हम भाषा की प्रकृति का अनुमान लगा सकते हैं। एन. ई. विश्वनाथ अय्यर के अनुसार, ''तुलनात्मक अध्ययन से विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का रसास्वादन तो होगा ही साथ ही हम गंभीरता से समीक्षा प्रधान अथवा काव्य-शास्त्रीय अध्ययन करना चाहते हैं तो हमें बड़ी मात्रा में सामग्री मिलेगी। चरित्र-चित्रण, प्रकृति वर्णन, परंपरा, कवि-समय, बिंब विधान, आख्यान शैली, छंद, कल्पना, मिथक, परिकल्पना आदि कितने ही क्षेत्रों में हम नए-नए साहित्यिक अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. पी. एम. वामदेव ने भी भारत में तुलनात्मक अध्ययन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तीव्र गति से चलने की बात कही है। हिंदी में भक्ति एवं रीति कालीन कवि तुलसी, सूर, केशव आदि ने अपने कवि रूप के संबंध में जो अनूठी उक्तियाँ कही हैं, उनमें हिंदी के तुलनात्मक अनुसंधान के बीज निहित हैं। भारतेंदु जी ने नाटकों के विवेचन में तुलनात्मक चेतना को प्रदर्शित किया। मिश्रबंधु आदि ने देव, बिहारी की तुलना कर श्रेष्ठ-कनिष्ठ को स्थापित किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी, आ. रामचंद्र शुक्ल ने भी इसे विकसित किया।

फ्रीडरिख श्लेगल ने १७९८ में 'सार्वभौम काव्यकला' की बात कही थी और उसके 25 वर्ष के बाद गोइते ने 'विश्व साहित्य' का संकेत दिया था। इन दोनों के उल्लेख अवधारणाओं का आशय यह है कि साहित्य में- वस्तुतः सर्वोत्कृष्ट कवियों के कृति के तत्व रूप में विद्यमान प्रतिनिधि साहित्य में- सदा ही कुछ ऐसा तत्व बना रहता है, जिसे समान रूप से समस्त मानव जाति का दायित्व माना जा सकता है और इसी कारण जिसमें इतनी व्याप्ति होती है कि वह मानवीय अनुभव के प्रत्येक पक्ष को अपने में समा सकता है। तुलनात्मक साहित्य अध्ययन में मानवी अनुभव और कलात्मक उत्कर्ष के इस सीमा विस्तार को समझने का प्रयत्न किया जाता है। तुलनात्मक साहित्य अध्ययन में समानताओं की खोज की जाती है और फिर उन उपलब्धियों के आलोक में पाठालोचन और कृति का वैज्ञानिक पहलू प्रस्तुत करते हैं। राजशेखर ने ठीक ही कहा था- " नास्ति अचौरः कविजन:" (अर्थात कभी दूसरे से

ग्रहण तो करते हैं, किंतु वह चोर नहीं है)। जाने अनजाने में ही वे अन्य कृति कारों से ऐसे तत्व अंगीकार करते रहते हैं, जो उन्हें किसी भी दृष्टि से ग्रहणीय जान पड़ते हैं।

भारतीय साहित्य में आधुनिक लेखकों ने वर्तमान समय में भी प्राचीन साहित्य-ऋग्वेद, उपनिषदों, पुराणों, महाभारत तथा रामायण - का भरपूर उपयोग किया है। इन ग्रंथों में कृतिकारों को पात्र तथा मिथक घटनाएं तथा कथानक सुलभ किए हैं। कहा जाए तो भारतीय साहित्य में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन की परंपरा आदि काल से प्रचलित थी।

प्रो. रवींद्र नाथ श्रीवास्तव का यह कथन दृष्टिगत होता है कि “भारत एक बहुभाषी देश है, यहां न केवल १६५२ मात्र भाषाएं हैं, अपितु अनेक समुन्नत साहित्यिक भाषाएं भी है, पर जिस प्रकार अनेक वर्षों के आपसी संपर्क और सामाजिक विविधता के कारण भारतीय भाषाएं अपनी रचना में भिन्न होते हुए भी अर्थ के मामले में समरूप है उसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि अपनी जाति, इतिहास, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्य एवं साहित्यिक संरचना के संदर्भ में भारतीय साहित्य एक हैं भले ही वह विभिन्न भाषाओं के अभिव्यक्ति माध्यम द्वारा व्यक्त हुआ है। यदि इस संकल्पना का विस्तार करें और भाषा भेद की सीमा को तोड़कर मनुष्य के इतिहास और विकास को देखने का प्रयास करें तो विश्व साहित्य की अवधारणा सामने आती है वास्तव में प्रत्येक भाषा के साहित्य के विषय वस्तु और रूप अभिव्यक्ति एवं उसकी मूल चेतना और विधा का निरूपण इतिहास के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में भी हुआ करता है जो उसे क्रमशः राष्ट्रीय साहित्य और विश्व साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

वस्तुतः राष्ट्रीय साहित्य द्वारा तुलनात्मक साहित्य का आधार तैयार होता है इसे यों भी कह सकते हैं कि तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा ही राष्ट्रीय साहित्य और उसमें निहित राष्ट्रीयता के तत्वों की पहचान की जा सकती है। इसलिए आर. ए .साईसी ने तुलनात्मक साहित्य को विभिन्न राष्ट्रीय साहित्य का एक दूसरे से आश्रय में तुलनात्मक संबंधों का अध्ययन कहा है।

इसी प्रकार गोइते ने विश्व साहित्य के संदर्भ में अपनी साहित्यिक परंपराओं से अन्य परंपराओं के बोध को अनिवार्य माना है।

जैसे कि हम जानते हैं भारत एक बहुभाषी देश है और यहाँ का साहित्य विभिन्न भाषाओं में रचा जाता है। विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीय संस्कृति और मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए तुलनात्मक पद्धति का सहारा लिया जाता है और यह देखा जाता है कि किसी साहित्यिक कृति को दूसरे प्रान्त के वासियों द्वारा किस प्रकार ग्रहण किया जाता है अथवा कोई एक साहित्य दूसरे साहित्य पर किस प्रकार प्रभाव डालता है उदाहरण के लिए हम बंगला और तेलुगु के साहित्य के संबंध की चर्चा कर सकते हैं- बंगला के कथा साहित्य को तेलुगु में इतनी सहजता से ग्रहण किया जाता है कि बहुत से पाठक तो आज शरतचंद्र को बंगला के बजाय तेलुगु का ही साहित्यकार समझते हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के साहित्य के विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य पर जो प्रभाव डाला है वह भी भारत के राष्ट्रीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसी प्रकार बाबासाहेब आंबेडकर के चिंतन से प्रभावित होकर जब मराठी में दलित साहित्य का उदय हुआ तो उसका प्रभाव तेलुगू, हिंदी, उर्दू पंजाबी आदि

सभी साहित्य पर भी पड़ा। इसी प्रकार अलग अलग प्रांत के प्रबुद्ध महिला लेखकों / कवि के साहित्य में भी तुलनात्मक अध्ययन की प्रचुर सामग्री उपलब्ध होती हैं। स्त्री विमर्श आज किसी एक भाषा के साहित्य की प्रवृत्तियां ना होकर भारतीय साहित्य के समानता की प्रवृत्ति है। ओल्गा, घंटसाला और निर्मला भले ही तेलुगू की कवियत्री हो, अनामिका और कात्यायनी हिंदी की, निर्मला पुतुल संताली की हो, दर्शन कौर और तरन्नुम रियाज पंजाबी की हो- इन सब के द्वारा स्त्री की यातना का चित्रण एक जैसा है और समग्र भारतीय स्त्री की यातना का द्योतक है। यह समरसता ही इन तमाम स्त्री विमर्श को भारतीय तुलनात्मक साहित्य का हिस्सा बनाते हैं।

इस प्रकार, साहित्य का अनुशीलन के क्षेत्र में हमारे सामने अवधारणाओं का अंतहीन आयाम प्रकट हो जाता है। रामायण और महाभारत महाकाव्यों, बौद्ध जातकों तथा जैन कथाओं को भारतीय साहित्य के लिए विषय वस्तु तथा कथानक का भंडार माना जा सकता है। तुलनात्मक साहित्य में काव्य रूपों के अध्ययन को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। भरत ने अपने 'नाट्य शास्त्र' में नाटक के १० रूपों का वर्णन किया है और नाट्यशास्त्र के अन्य सभी अग्रणी नाटककारों ने इसे अंगीकार कर लिया है।

तुलनात्मक साहित्य अध्ययन के अंतर्गत साहित्य में सामान्य कला- प्रतिमानों के अनुप्रयोग, युग विशेष के विभिन्न साहित्यिक आंदोलन तथा प्रवृत्तियों के बोध, विभिन्न साहित्य में निहित प्रतिपाद्य विषयों तथा विचारों के अनुशीलन, और अंततः शैली, रचना विधान एवं प्रतिमानों के विश्लेषण का समावेश किया जाता है। आज भारतवर्ष में सैंकड़ों की संख्या में तुलनात्मक अध्ययन हो रहे हैं। आज इक्कीसवीं सदी में भूमंडलीकरण, बाजारवाद के कारण संपूर्ण विश्व एक 'विश्वग्राम' के रूप में बन गया है। ऐसे में तुलनात्मक साहित्य को अनेक कारणों से अनन्यसाधारण महत्त्व प्राप्त हुआ है।

१.४.२ तुलनात्मक साहित्य - पाश्चात्य परम्परा:

आधुनिक युग में तुलनात्मक साहित्य के अनुशासन में कई देशों में अंतर्राष्ट्रीय तुलनात्मक साहित्य संघ- International Comparative Literature Association (ICLA) और तुलनात्मक साहित्य संघ जैसे विद्वानों के संघ हैं और कई पत्रिकाएँ हैं जो तुलनात्मक साहित्य में विश्व साहित्य का अध्ययन करने में सहायक हुई हैं। तुलनात्मक साहित्य की परम्परा पश्चिमी देशों में बीसवीं सदी के प्रारम्भ में हुई, इसके कुछ प्रमुख स्कूल इस प्रकार हैं-

१.४.२.१ फ्रेंच:

बीसवीं शताब्दी के शुरुवाती भाग से दूसरे विश्व - युद्ध के दरम्यान फ्रान्स में तुलनात्मक साहित्य को एक विशेष रूप से अनुभव वादी और प्रत्यक्ष वादी दृष्टिकोण को केन्द्रित कर एक राष्ट्र के साहित्य की दूसरे देश के साहित्य की तुलना करने की विशेषता थी जिसे "फ्रांसीसी स्कूल" कहा जाता था, जिसमें पॉल वान, टाईघम जैसे विद्वान शामिल थे जिन्होंने "मूल" और "विभिन्न राष्ट्रों के कार्यों के बीच प्रभाव" अनेक राष्ट्रों के साहित्य के माध्यम से समझने का प्रयास किया। इस प्रकार एक विद्वान यह पता लगाने का प्रयास कर सकता है कि समय के साथ राष्ट्रों के बीच एक विशेष साहित्यिक विचार या आदर्श कैसे यात्रा करता है? तुलनात्मक साहित्य के फ्रेंच स्कूल में, प्रभावों और मानव वर्तन का अध्ययन हावी है

। आज, फ्रांसीसी स्कूल अनुशासन के राष्ट्र-राज्य दृष्टिकोण का अभ्यास करता है हालांकि यह "यूरोपीय तुलनात्मक साहित्य" के दृष्टिकोण को भी बढ़ावा देता है। इस स्कूल के प्रकाशनों में शामिल हैं, (१९६७) सी. पिचोइस और ए. एम रूसो द्वारा, ला क्रिटिक लिटरेरे (१९६९), जे.सी. कार्लोनी और जीन फिलौक्स द्वारा और ला लिटरेचर कम्पैरी (१९८९), यवेस शेवरेल द्वारा, अंग्रेजी में तुलनात्मक साहित्य के रूप में अनुवादित तरीके और परिप्रेक्ष्य (१९९५)।

१.४.२.२ जर्मन:

फ्रेंच स्कूल की तरह, जर्मन तुलनात्मक साहित्य की उत्पत्ति १९ वीं शताब्दी के अंत में हुई थी। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, विशेष रूप से एक विद्वान पीटर सोंडी (१९२९-१९७१), एक हंगेरियन जो मुक्त यूनिवर्सिटी, बर्लिन में पढ़ाते थे उनके कारण तुलनात्मक साहित्य की परम्परा काफी हद तक विकसित हुई। ऑलगेमीन अंड वेरग्लीचेंडे लिटरेचरविसेन्सचाफ्ट ("सामान्य और तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन" के लिए जर्मन) में सोंडी के काम में नाटक की शैली, गीत (विशेष रूप से उपदेशात्मक) कविता, और Hermeneutics (हेर्मेनेयुटिक्स-धर्मग्रन्थ, बाइबल / scripture) शामिल थे: "ऑलगेमीन और वर्ग्लीचेंडे लिटरेचरविसेन्सचाफ्ट की सोंडी की दृष्टि उनकी दोनों नीति में स्पष्ट हो गई। बर्लिन में अंतर्राष्ट्रीय अतिथि वक्ताओं को आमंत्रित करना और उनकी वार्ता में उनका एवम् उनके कार्य का परिचय दिया। सोंडी ने अन्य लोगों के बीच, जैक्स डेरिडा का स्वागत किया (दुनिया भर में मान्यता प्राप्त करने से पहले), फ्रांस से पियरे बॉर्डियू और लुसिएन गोल्डमैन , जेरूसलम से गेर्शोम शोलेम, फ्रैंकफर्ट से थियोडोर डब्ल्यू एडोर्नो, तत्कालीन युवा विश्वविद्यालय कोन्स्टांज से हंस रॉबर्ट जौस, और यू. एस रेने से उदार प्रचारक लियोनेल ट्रिलिंग के साथ वेलेक, जेफ्री हार्टमैन और पीटर डेमेट्ज़ (येल में सभी). इन विज़िटिंग विद्वानों (अतिथि विद्वान) के नाम, जो एक प्रोग्रामेटिक नेटवर्क (कार्यक्रम सम्बन्धित नमूना) और एक पद्धतिगत सिद्धांत बनाते हैं। हालांकि, पूर्वी जर्मनी में काम करने वाले जर्मन तुलनावादियों को आमंत्रित नहीं किया गया था और न ही फ्रांस या नीदरलैंड से मान्यता प्राप्त सहयोगी थे। फिर भी जब वे पश्चिम और पश्चिम जर्मनी के नए सहयोगियों की ओर उन्मुख हुए थे और पूर्वी यूरोप में तुलनावादियों की तरफ बहुत कम ध्यान दिया तब एक अंतरराष्ट्रीय और तुलनात्मक साहित्य की उनकी अवधारणा रूसी और पूर्वी यूरोपीय साहित्यिक सिद्धांतकारों से बहुत अधिक प्रभावित थी। संरचनावाद के स्कूल, जिनके कार्यों से रेने वेलेक ने भी अपनी कई अवधारणाएं प्राप्त कीं जो आज भी तुलनात्मक साहित्यिक सिद्धांत के लिए गहरा प्रभाव डालती हैं। हालाँकि, यह स्थिति तेजी से बदल रही है, क्योंकि कई विश्वविद्यालय हाल ही में शुरू किए गए बैचलर और मास्टर ऑफ आर्ट्स की नई आवश्यकताओं के अनुकूल हैं। जर्मन तुलनात्मक साहित्य को एक ओर पारंपरिक भाषाशास्त्र द्वारा चालित किया जा रहा है और दूसरी ओर अध्ययन के अधिक व्यावसायिक कार्यक्रम जो छात्रों को वह व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना चाहते हैं जो उन्हें व्यवहारिक कार्य के लिए 'एप्लाइड लिटरेचर' के माध्यम से ज्यादा उपलब्ध हुआ। जर्मन विश्वविद्यालय अब अपने छात्रों को मुख्य रूप से एक अकादमिक क्षेत्र के लिए शिक्षित नहीं कर रहे हैं बल्कि छात्रों को तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अधिक व्यावसायिक दृष्टिकोण प्रदान करने का प्रयास करने लगे हैं।

१.४.२.३ अमेरिकन (यू.एस.):

फ्रांसीसी स्कूल पर प्रतिक्रिया करते हुए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विद्वानों ने सामूहिक रूप से "अमेरिकन स्कूल" को मान्यता दी साहित्यिक आलोचना से अधिक सीधे विस्तृत ऐतिहासिक शोध पर जोर दिया जिसकी फ्रांसीसी स्कूल ने मांग की थी। अमेरिकन स्कूल को गोएथे और पॉसनेट के मूल अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ और अधिक निकटता से जोड़ा गया था (यकीनन अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए युद्ध के बाद की परिस्थिति को दर्शाता है)। सार्वभौमिक मानव "सत्य" के उदाहरणों की तलाश में साहित्यिक कट्टरपंथियों के आधार पर जो हर समय और हर जगह साहित्य में दिखाई देते हैं। .

अमेरिकन स्कूल के आगमन से पहले, पश्चिम में तुलनात्मक साहित्य का दायरा आमतौर पर पश्चिमी यूरोप और एंग्लो-अमेरिका के साहित्य तक सीमित था। मुख्य्य रूप से अंग्रेजी , जर्मन और फ्रेंच साहित्य में साहित्य इतालवी (Italy) साहित्य में सामयिक प्रयासों के साथ (मुख्यतः के लिए) दांते) और स्पेनिश साहित्य (मुख्य्य रूप से मिगुएल डे सर्वेंट्स के लिए)। इस अवधि के दृष्टिकोण के लिए एक स्मारक है एरिच ऑरबैक की पुस्तक मिमिसिस: जो पश्चिमी साहित्य में वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करती है। यथार्थवाद की तकनीकों का एक सर्वेक्षण ग्रंथों में जिनकी उत्पत्ति कई महाद्वीपों तक फैली हुई है।

अमेरिकन स्कूल का दृष्टिकोण सांस्कृतिक अध्ययन के वर्तमान चिकित्सकों के लिए परिचित होगा और यहां तक कि कुछ लोगों द्वारा १९७० और १९८० के दशक के दौरान विश्वविद्यालयों में सांस्कृतिक अध्ययन प्रक्रिया के अग्रदूत होने का भी दावा किया जाता है। आज का क्षेत्र अत्यधिक विविध है: उदाहरण के लिए तुलनावादी नियमित रूप से चीनी साहित्य , अरबी साहित्य और अधिकांश अन्य प्रमुख विश्व भाषाओं और क्षेत्रों के साहित्य के साथ-साथ अंग्रेजी और महाद्विपीय यूरोपीय साहित्य का अध्ययन करते हैं।

१.५ तुलनात्मक साहित्य वर्तमान संदर्भ में

संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य जगहों पर तुलनावादियों के बीच एक आंदोलन है कि अनुशासन को राष्ट्र-आधारित दृष्टिकोण से दूर या फिर से केंद्रित किया जाए जिसके साथ यह पहले एक क्रॉस-सांस्कृतिक दृष्टिकोण की ओर जुड़ा हुआ है जो राष्ट्रीय सीमाओं पर ध्यान नहीं देता है। इस प्रकृति के कार्यों में शामिल हैं आलमगीर हाशमी की द कॉमनवेल्थ, कम्पेरेटिव लिटरेचर एंड द वर्ल्ड, गायत्री चक्रवर्ती स्पिवक की डेथ ऑफ ए डिसिप्लिन, डेविड डमरोश की व्हाट इज वर्ल्ड लिटरेचर?, स्टीवन टोटोसी डी ज़ेपेटनेक की "तुलनात्मक सांस्कृतिक अध्ययन" की अवधारणा, और पास्कल कैसानोवा की द वर्ल्ड रिपब्लिक ऑफ़ लेटर्स यह देखा जाना बाकी है कि क्या यह दृष्टिकोण सफल साबित होगा क्योंकि तुलनात्मक साहित्य की जड़ें राष्ट्र-आधारित सोच में थीं और अध्ययन के तहत साहित्य अभी भी राष्ट्र-राज्य के मुद्दों से संबंधित है। वैश्वीकरण और अंर्तसंस्कृतिवाद के अध्ययन में विकास को देखते हुए तुलनात्मक साहित्य, जो पहले से ही एकल-भाषा राष्ट्र-राज्य दृष्टिकोण की तुलना में व्यापक अध्ययन का प्रतिनिधित्व करता है राष्ट्र-राज्य के प्रतिमान से दूर जाने के लिए उपयुक्त हो सकता है। जबकि पश्चिम में तुलनात्मक साहित्य संस्थागत संकुचन का अनुभव कर रहा है ऐसे संकेत हैं कि दुनिया के कई हिस्सों में यह

अनुशासन फल-फूल रहा है, खासकर एशिया, लैटिन अमेरिका, कैरिबियन और भूमध्य सागर में अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों में वर्तमान रुझान भी औपनिवेशिक साहित्यिक आंकड़ों के बढ़ते महत्व को दर्शाते हैं जैसे किजेएम कोएत्ज़ी, मरीस कोंडे, अर्ल लवलेस, वी.एस. नायपॅाल, माइकल ओन्डात्जे, वोले सोयिंका, डेरेक वालकॉट, और लसाना एम. सेकोउ। उत्तरी अमेरिका में हाल के औपनिवेशिक अध्ययनों के लिए जॉर्ज इलियट क्लार्क की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। दिशा-निर्देश होम अफ्रीकी-कनाडाई साहित्य के दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया (रूटलेज, २०१२)। कनाडा के विद्वान जोसेफ पिवाटो अपनी पुस्तक कम्पेरेटिव लिटरेचर फॉर द न्यू सेंचुरी एड के साथ तुलनात्मक अध्ययन को पुनर्जीवित करने के लिए एक अभियान चला रहे हैं। कनाडा के तुलनात्मक साहित्य संघ की एक पहल पिवाटो कनाडाई तुलनावादियों सुसान इनग्राम और आइरीन सिवेनकी के सह-संपादित तुलनात्मक साहित्य कनाडा:- यह संघ आधुनिक दुनिया में तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

तुलनात्मकवादी साहित्यकार- वर्तमान समय के मानकों के अनुसार, अधिकांश विद्वानों का इरादा अन्य संस्कृतियों की समझ को बढ़ाना था न कि उन पर श्रेष्ठता का दावा करना।

१.६ सारांश

तुलनात्मक साहित्य की एक मौलिक योजना भाषाई सीमाओं के पार अन्य देशों के साहित्य को पढ़ने की रुचि जागृति करना है। पारंपरिक रूप से साहित्य का अध्ययन करने का मतलब एक अकादमिक विभाग चुनना है जो मूल रूप से यूरोपीय मॉडल पर राष्ट्र राज्य को दर्शाता है। अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन कार्यक्रम प्रत्येक अपनी-अपनी राष्ट्रीय परंपराओं के सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। लेकिन साहित्य और पाठक दोनों हमेशा एक राष्ट्रभाषा की सीमाओं से बाहर रहे हैं। जर्मन साहित्य अंग्रेजी और फ्रेंच और इतालवी और ग्रीक और रोमन साहित्य आदि के प्रभाव से भरा हुआ है। और यहां तक कि लेखक जो एक दूसरे के बारे में कुछ नहीं जानते थे आज तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से उनके साहित्य में आकर्षक समानताएं और अंतर दिखा सकते हैं।

परंपरागत रूप से, एशियाई, अफ्रीकी और मध्य पूर्वी साहित्य (जब उनका बिल्कुल भी अध्ययन किया गया था) लंबे समय से क्षेत्रीय अध्ययन के रूब्रिक में शामिल थे। यूरोपीय साहित्य को सौंदर्य की दृष्टि से स्वायत्त और "राष्ट्रीय प्रतिभा" की अभिव्यक्ति दोनों के रूप में समझा जाता था जबकि गैर-पश्चिम के ग्रंथों को अपने आप में साहित्य के कार्यों की तुलना में ऐतिहासिक या मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से अधिक पढ़ा जाता था। तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र भी क्षेत्रीय अध्ययनों की अंतःविषय पहुंच के साथ यूरोपीय साहित्यिक अध्ययन की औपचारिक कठोरता को जोड़कर "पश्चिम" और "बाकी" के बीच इस विभाजन को दूर करने का प्रयास करता है।

तुलनात्मक साहित्य के छात्र समय और स्थान पर साहित्यिक विधाओं और ग्रंथों के परिवर्तन और यात्रा का पता लगाते हैं। वे इतिहास, दर्शन, राजनीति और साहित्यिक सिद्धांत के साथ साहित्य के संबंधों का पता लगाते हैं और वे फिल्म, नाटक, दृश्य कला, संगीत और न्यू मीडिया जैसे अन्य सांस्कृतिक रूपों के साथ साहित्य के अंतर्संबंधों का

अध्ययन करते हैं। हमारे बढ़ते हुए वैश्विक युग में, अनुवाद अध्ययन भी साहित्य के तुलनात्मक दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

तुलनात्मक साहित्य में एकाग्रता के मूल में तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में पश्चिमी, पूर्वी एशियाई, मध्य पूर्वी और दक्षिण एशियाई साहित्यिक परंपराओं को पेश करने वाले पाठ्यक्रम हैं। ये पाठ्यक्रम छात्रों को तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन के तरीकों से परिचित कराते हुए साहित्यिक रूपों और शैलियों की वैश्विक विविधता से परिचित कराते हैं।

तुलनात्मक साहित्य में एकाग्रता स्नातक स्तर पर आगे के काम के लिए एक उत्कृष्ट आधार है। यह छात्रों को किसी भी क्षेत्र में काम करने के लिए तैयार करता है जहां महत्वपूर्ण सोच, मजबूत लेखन कौशल और विदेशी भाषा की क्षमता और सांस्कृतिक अंतर और विविधता की एक परिष्कृत समझ की आवश्यकता होती है।

१.७ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. तुलनात्मक का अर्थ, परिभाषा एवम् व्युत्पत्ति स्पष्ट कीजिए।

२. तुलनात्मक साहित्य के प्रारम्भ एवम् भारतीय परम्परा पर प्रकाश डालिए।

३. पाश्चात्य तुलनात्मक साहित्य के स्कूलों का उल्लेख कीजिये।

१.८ लघुत्तरीय प्रश्न

१. एक वाक्य में उत्तर लिखिए।

अ) भारत में सर्वप्रथम कम्पेरेटिव literature शब्द का प्रयोग किस विद्वान ने किया ?

ब) रेने वेलेक पासनेट के अनुसार तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा क्या दी गयी है ?

स) विश्व कोशात्मक ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी में तुलना के विषय में क्या लिखा गया है ?

क) 'कम्पैरेटिव literature' इस पद का प्रयोग सर्वप्रथम अंग्रेजी के किस विद्वान ने किया ?

१.९ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प) ------------ साहित्य में दो या दो से अधिक भिन्न भाषाओँ, राष्ट्रीय या साँस्कृतिक समूहों का साहित्यिक अध्ययन किया जाता है।

(तुलनात्मक, अनुवाद, इतिहासात्मक, व्याख्यात्मक)

फ) नास्ति अचौरः कविजन: ------------ने कहा है।

(चन्द्रभान, राजकुमार, चंद्रशेखर, राजशेखर)

ब) -------------- तुलनात्मक साहित्य को विशेष रूप से अनुभववादी और प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण दिया था।

(फ्रेंच स्कूल, अमेरिकी स्कूल, जर्मन स्कूल, भारतीय स्कूल)

भ) तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के--------- लिटरेचर शब्द का हिन्दी अनुवाद है।

(continuous, cunning, compact, comparative).

१.१० संदर्भ ग्रंथ

१. तुलनात्मक साहित्य, सम्पादक – डॉ नगेन्द्र

२. लिटरेरी क्रिटिसिज्म इन इण्डिया , सम्पादक – नगेन्द्र

३. इन्टरनेट।

*****

२

तुलनात्मक अध्ययन के तत्व
तुलनात्मक साहित्य के प्रमुख स्कूल

इकाई की रूपरेखा

२.० इकाई का उद्देश्य

२.१ प्रस्तावना

२.२ तुलनात्मक अध्ययन के तत्व

२.३ तुलनात्मक साहित्य के प्रमुख स्कूल

  २.३.१ फ्रेंच-फ्रांसीसी स्कूल

  २.३.२ जर्मन स्कूल

  २.३.३ अमेरिकन स्कूल

  २.३.४ रूसी स्कूल

२.४ सारांश

२.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

२.६ लघुत्तरीय प्रश्न

२.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

२.८ संदर्भ ग्रंथ

२.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी निम्नलिखित मुद्दों से अवगत हो सकेंगे।

- तुलनात्मक अध्ययन के तत्वों का अध्ययन कर सकेंगे।
- तुलनात्मक साहित्य के प्रमुख स्कूलों की विस्तार पूर्वक जानकारी हासिल कर सकेंगे।

२.१ प्रस्तावना

विश्व स्तर पर मानव जीवन एक समान सा है। जैसे कि मनुष्य का रहन सहन, जीवन-यापन, सोच- विचार और जीवन के विविध आयाम एक समान दिखाई देते हैं। इस तथ्य के आधार पर वैश्विक एकता और मानवता को बल देने के उद्देश्य से तुलनात्मक अध्ययन बहुत ही महत्व रखता है। सामान्यत: संसार की प्रत्येक वस्तु में भिन्नता होती है। "इस संसार में वस्तुओं के चिंतन - मनन आदि के संबंध में एक प्रकार का सापेक्षवाद कार्य करता है। इसी सापेक्षता की साहित्यिक स्तर पर तुलना की जा सकती है और इस प्रकार का शोध तुलनात्मक शोध कहलाएगा।"[१] मनुष्य के स्वभाव में तुलना होती है। वह अपने सुख-दुख की तुलना से लेकर आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक आदि सभी क्षेत्रों की तुलना करता

रहता है। इस तुलना के माध्यम से अपने सुख- दुख की परिपूर्णता और अभावग्रस्तता का अनुभव करता है। इसी तर्ज पर साहित्य की तुलना का उद्भव और विकास हुआ है। इस तरह कह सकते हैं कि तुलनात्मक अध्ययन मानवीय स्वभाव की परिणिति है।

तुलनात्मक अध्ययन के लिए तुलनात्मक साहित्य शब्द का ही प्रयोग किया जाता है। "तुलनात्मक अध्ययन में किसी भी साहित्यिक रचना का सामान्यतः शैली, रचना शिल्प, मनस्थिति या विचारगत समानताओं का अध्ययन विश्लेषण होता है।"[२] किन्हीं दो रचनाकारों में आकृति ,प्रकृति, विचारधारा और चिंतन-मनन में अंतर होता है। उनके भावभूमि में अंतर होता है। अत: किन्हीं दो रचनाकारों की रचनाओं में अंतर अवश्य होता है। इसके साथ ही संस्कृति, परिवेश, भाषा ,प्रदेश तथा काल के कारण यह भिन्नता अधिक अधोरेखित होती है। 'ग्रेट माइंड्स थिंकस अलाइक' की उक्ति के अनुसार रचनाकारों के साहित्य में पर्याप्त सूक्ष्म साम्य भी दृष्टिगोचर होता है। तुलनात्मक अध्ययन यह संकल्पना ५० से ६० वर्ष पहले अनुसंधान के क्षेत्र में आयी है। तुलनात्मक अध्ययन के लिए कोई विशिष्ट परिधि नहीं है। जहां जो तुलना के योग्य है, वही तुलनात्मक अध्ययन का विषय बन जाता है। मैक्स- मूलर मानते हैं कि उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति तुलना पर ही आधारित होती है। "दो या दो से अथवा अधिक भिन्न भाषाओं के उनकी राष्ट्रीयता को ध्यान में रखकर साहित्य का किया गया अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन है।"[३] तुलनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत एक ही साहित्य के दो युगों, काव्य प्रवृत्तियों, दो साहित्यकारों की तुलना एक साहित्य कला का दूसरे साहित्य पर प्रभाव आदि की तुलना तथा विभिन्न साहित्य के दो साहित्यकारों की तुलना, एक साहित्य कला का दूसरे साहित्य पर प्रभाव आदि की तुलना तथा विभिन्न साहित्यो के दो कवियों, लेखकों, कृतियों, प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।" सैद्धांतिक दृष्टि से तुलना या तो अंतर भाषिक परिप्रेक्ष्य से जुड़ी हो सकती है जहां तुलनीय विभिन्न साहित्यिक कृतियों एकल साहित्यानुशासन से संबद्ध होती है नहीं तो यह तुलना अंतर भाषिक परिप्रेक्ष्य से संबद्ध होती है। जहां तुलना एकल साहित्य अनुशासन की परिधि को पार कर दूसरी भाषाओं में लिखित साहित्य को अपने में समेट लेती है। तुलनात्मक साहित्य मूलतः अंतः भाषिक परिप्रेक्ष्य से जुड़ा हुआ तुलनात्मक अध्ययन है।"

तुलनात्मक अनुसंधान या पश्चिम से आयी हुई संकल्पना है। साहित्य के क्षेत्र में उसका प्रयोग तुलनात्मक साहित्य के लिए किया जाता है। पश्चिम में तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन करने वाले प्रमुख तीन संप्रदाय हैं:

१. अमेरिका स्कूल

२. पेरिस स्कूल और

३. रुसी स्कूल।

अमेरिकी स्कूल इस बात पर जोर देता है कि अन्य कलाएं भी साहित्य को प्रभावित करती हैं। इसलिए साहित्य और अन्य कलाओं का तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिए। पेरिस और जर्मन स्कूल इस बात का समर्थन करता है कि दो भिन्न भाषाओं के साहित्य के बीच जो वास्तविक संबंध हैं उनके आधार पर तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिए। रूसी स्कूल के

अनुसार लोक साहित्य शिष्ट साहित्य को प्रभावित करता है। अतः लोक साहित्य शिष्ट साहित्य को किस प्रकार प्रभावित करता है यही आधार तुलनात्मक अध्ययन का होना चाहिए।

भारत में तुलनात्मक अध्ययन प्राचीन काल से होता आ रहा है। संस्कृत में कालिदास और दंडी तथा हिंदी में सूरदास और तुलसीदास के काव्य का उदाहरण दिया जा सकता है। देव और बिहारी के काव्य का भी तुलनात्मक अध्ययन किया जा चुका है। संस्कृत और प्राकृत के कवियों एवं नाटक,कारों की तुलना आनंद वर्धन, कुंतक आदि आचार्यों ने की है। लेकिन यह केवल तुलना है उसे सैद्धांतिक तुलनात्मक अध्ययन नहीं कहा जा सकता। ऑस्कर जे. कैंपबेल, वेर्नेर फ्रेडरिच, ए.जी.माऊलटन, रेने वैलक, ए. आल्ड्रीज आवन आदि पाश्चात्य तुलनात्मक अनुसंधानकर्ताओं ने तुलनात्मक अध्ययन का महत्व जाना और समझाया है।

भारत में तुलनात्मक अध्ययन की संकल्पना २० वीं सदी में पहुंची। भारत में तुलनात्मक अध्ययन की शाखा का उदय होने से अनुसंधान को नई दृष्टि प्राप्त हुई । इससे प्रदेश, भाषा, वंश,काल एवं संस्कृति की सीमाओं को लांघ कर साहित्य का अध्ययन किया जा रहा है। तुलनात्मक अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत हो रहा है। भारतीय विद्वान इसके प्रति आकर्षित हुए हैं। आज एक स्वतंत्र विद्या शाखा के रूप में तुलनात्मक अध्ययन को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। शुरू में भारतीय साहित्य की तुलना अंग्रेजी साहित्य से की जाने लगी। तत्कालीन विद्वानों के विचारों का प्रभाव विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों पर भी पड़ा, और तुलनात्मक अध्ययन को बढ़ावा मिला। आज तक अनेक शोधार्थियों ने महत्वपूर्ण विषयों में तुलनात्मक अध्ययन किया है। साहित्यिक भाषा वैज्ञानिक एवं लोक साहित्य को लेकर तुलनात्मक अनुसंधान किया जा रहा है। भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में तुलनात्मक अध्ययन के लिए व्यापक अवसर है। संविधान की अनुसूची में निर्दिष्ट सभी भाषाओं में लिखित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। "संविधान भाषाई सहयोग की बात करता है" (६) इसके माध्यम से भारत की भिन्न संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला जा रहा है। सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से भी तुलनात्मक अध्ययन महत्व रखता है। इसे दूर समाज तथा संस्कृतियों के नजदीक आने में सहायता हो रही है।

२.२ तुलनात्मक अध्ययन के तत्व

तुलनात्मक अध्ययन के शुरुआती दौर से ही तुलनात्मक अध्ययन की प्राथमिकता और पद्धति की मीमांसा पर प्रश्न उठाए जा रहे हैं। पाश्चात्य विद्वान हेलन टिफिन द्वारा अपने लेख में यह कहा गया है कि-"औपनिवेशिक तुलनात्मक फलक तत्वत: पद्धति मीमांसा ना होते हुए भी वह केवल उपयुक्त ही नहीं पर अति आवश्यक है। तुलनात्मक साहित्य में नई-नई और पद्धतियां मिलने की संभावनाएं हो सकती हैं। यहां अनुसंधानकर्ताओं को विषय चयन के बाद निरर्थक विषयों पर ध्यान न देते हुए अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करना चाहिए। साहित्यिक कृति के मूल्यांकन में तात्विक मतभेद के मुख्यत: दो मुद्दे विचारणीय होते हैं। प्रथम मुद्दा है रचना के बाह्य बातों का समावेश तुलना में किया जाए या नहीं। और दूसरा मुद्दा है रचनाकार का चरित्र तथा सामाजिक राजनीतिक मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को केंद्र में रखा जाए या रचना के मूल्यांकन के लिये उसके कला गुण समुदायों पर तवज्जो दे।

अमेरिकन स्कूल और फ्रेंच स्कूल में जो तात्विक भेद है उसी पर यह समस्या खड़ी हुई है। फ्रेंच स्कूल रचना का अध्ययन करते हुए 'डॉक्यूमेंटेशन' अर्थात रचना की सामग्री के आधार पर सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भों से तुलना करता है । अमेरिकन स्कूल को यह स्वीकार्य नहीं है। साहित्य में सामाजिक परिस्थिति से बिल्कुल विपरीत साहित्य रचना के उदाहरण भी मिलते हैं। तुलनात्मक साहित्य में रचना का संबंध सामाजिक और चरित्रात्मक परिस्थितियों से जोड़ना जरूरी होता है। यह मत डॉ. अनंत केदारे जी का है .उनका मानना है कि साहित्यकार समाज से निरपेक्ष नहीं रह सकता है । साहित्यकार अपनी रचना में समाज की प्रवृत्तियों को ही उद्घाटित करता है. डॉ. केदारी जी के मतानुसार तुलनात्मक साहित्य के दो मूल विचार हैं- तुलना इतिहास सम्मत होनी चाहिए। तथा तुलना सौंदर्यवादी होनी चाहिए। इन दो धाराओं में अपने अपने दृष्टिकोण हैं, जिनके कारण इन दोनों में संघर्ष होता है। इस संघर्ष को दूर करने के लिए उन्होंने तीन मार्ग बताए हैं:

१. दूसरे दृष्टिकोण को कचरे की टोकरी में डाला जाए।

२. वांङ्मय समीक्षा और इतिहास की अलग-अलग शाखा बनाई जाए, और

३. उपरोक्त दोनों मार्गो से तनाव ही बढ़ेगा तुलना कार का ध्येय साहित्यिक कृति के संबंध में खोजना है।

अपनी खोज जारी रखने के लिए चाहिए कि रचना में से ऐतिहासिक और सौंदर्यशास्त्र संबंधों का अध्ययन किया जाए । डॉ. अनंत केदारी जी ने फ्रेंच और अमेरिका के साहित्यिक संप्रदायों के तुलनात्मक साहित्य की मान्यताओं को जोड़कर तात्विक आधार सुलझाने के प्रयास किये है, जो निम्नलिखित है।

१. तुलनात्मक साहित्य अध्ययन में शैली शास्त्रीय अध्ययन की संख्या बढ़ाए । उसमें इतिहास का विचार हो पर शैली के साधन केंद्र स्थान पर रहने चाहिए।

२. साहित्यिक रचना की ओर वापस चले यह सिर्फ अनुसंधान के लिए आवश्यक तथा संहिताओं को परिपूर्ण करने के लिए हो तो उचित है पर टुकड़ों में तुलना करने का कोई महत्व नहीं है।

३. फ्रेंच लोगों की साधर्म्य-शोध (Analogy) अधिक पसंद नहीं है, बल्कि साम्य-भेद (Parallels) की खोज लाभदायक होती है । अमेरिका की नई समीक्षा में कलाकृति बिल्कुल अलग हो जाती है।

   जब हम साम्य-भेद खोजते हैं, तब कलाकृति के साथ रहते है । दो लेखकों का तुलनात्मक अध्ययन भी हो सकता है, उनके समग्र साहित्य की तुलना भी की जा सकती है।

४. फ्रेंच परंपरा में लेखक साहित्यिक रचना की परिस्थिति और मनोवैज्ञानिक संवेदना की खोज करने की परंपरा पर्याप्त समृद्ध दिखाई देती है। शिवाजी सावंत का उपन्यास 'मृत्युंजय' का सौंदर्य शास्त्रीय रसग्रहण वी.स. खंडेकर की सौंदर्य दृष्टि के संदर्भ में ही

संभव है। क्यों और क्या दोनों प्रश्न अन्य पर आश्रित हैं। अनेक कई बार भाई यह चीजें अंतर्गत बन जाती हैं, इस बिंदु पर तुलना महत्वपूर्ण बनती है।

५. आज तक 'प्रभाव' संकल्पना का अधिक विकास तुलनात्मक पाश्चात्य में विकसित दिखाई नहीं देता हालांकि उसकी क्षमता अधिक है। किंतु पाश्चात्य विद्वानों ने पूरब के साहित्यकार यूरोप और अमेरिका के प्रभाव से प्रभावित होने की बात कही है। इस तरह अमेरिकन तथा रूसी विद्वानों के प्रभाव के बात स्वीकार की है।

६. फ्रेंच विद्वानों ने लोककाव्य और प्रसिद्ध अध्ययन को पसंद किया है। इनका मानना है कि इसके द्वारा ही ऐतिहासिक और सौंदर्य शास्त्रीय अध्ययन किया जा सकता है।

७. भाषांतर को स्वतंत्र वांङमयी विधा के रूप में मान्यता नहीं मिलती थी। केंद्रीय साहित्य अकादमी ने भाषांतर के लिए पुरस्कार प्रारंभ करने के बाद तुलनात्मक साहित्य की परिस्थिति में सकारात्मक बदलाव आया है।

८. कल्पना विज्ञान इस तत्व का आज तुलनात्मक साहित्य में महत्व बढ़ता जा रहा है। मिथक, प्रतीक, रूपांतरण, दूरीकरण जैसे विषय की लोकप्रियता बढ़ रही है।

इस तरह तुलनात्मक अध्ययन के मूल तत्व सामने आए हैं। और आने वाले दिनों में इनमें वृद्धि होने की संभावना बनी हुई है।

२.३ तुलनात्मक साहित्य के प्रमुख स्कूल

तुलनात्मक अध्ययन एक व्यापक संकल्पना है। उसका क्षेत्र विशाल है। इसलिए उसका उद्देश्य महान है। "तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा ज्ञान की वृद्धि, सुख समृद्धि, उच्चतर मानवीय मूल्यों की स्थापना की जा सकती है।"[१] इसलिए इस प्रकार के अनुसंधान को सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। "किन्हीं भी दो रचनाकारों की रचनाओं का पूर्णत: अध्ययन, विश्लेषण एवं संभावना, संपन्नता का पर्याप्त ज्ञान तुलनात्मक अध्ययन की पूर्वपीठिका है।"[२] तुलनात्मक अनुसंधान सामान्य शोध की अपेक्षा कठिन है। इसलिए तुलनात्मक अध्ययन करते समय शोधार्थी को विशिष्ट बातों पर ध्यान देना पड़ता है। "एक ही भाषा के साहित्य का एक ही दृष्टि से किए जाने वाले शोध कार्य की तुलना में दो या अधिक भाषा के साहित्य का तुलनात्मक दृष्टि से किया गया शोध कार्य ज्ञान की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है।"[३]

तुलनात्मक अध्ययन के दो महत्वपूर्ण बिंदु हैं -साम्य और वैषम्य। तुलनात्मक अध्ययन में दोनों प्रकार का विवेचन किया जाता है। संसार की किन्हीं भी दो वस्तुओं में जहां विषमता होती है, वहां समता के कुछ ना कुछ बिंदु अवश्य उपस्थित होते हैं। तुलनात्मक अध्ययन में साम्यकी खोज के लिए निम्नलिखित बिंदुओं का प्रयोजन होता है।

१) तुलना के लिए आवश्यक आधारों की प्राप्ति करना,

२) जीवन मूल्यों की समानताओं से भावनात्मक एकता की प्राप्ति करना, जैसे आचार, व्यवहार आदि सांस्कृतिक समानताओं से आत्मीयता प्राप्त करना,

३) आत्मीयता से वर्तमान समस्याओं को समझने और उनके समाधान ढूंढने के लिए आवश्यक सद्भाव एवं वातावरण की निर्मिति करना,

४) समानताओं की खोज से कला या सृजन के स्तर पर असीम अटूट आत्मविश्वास का निर्माण की संभावनाएं तलाशना।

साम्य की खोज की तरह तुलनात्मक अध्ययन में वैषम्य याने असमानताओं की खोज भी महत्वपूर्ण होती है। वैषम्य या असमानताओं की खोज तुलनात्मक अध्ययन के लिए तत्वों की पहचान होती है। इस पहचान से उन तत्वों के प्रति सजग रहने की चेतना प्राप्त होती है। और असमानता की खोज से अपने अभावों का पता चलता है। तथा उन्हें दूर करने के लिए रास्ते की तलाश संभव होती है। तुलनात्मक साहित्य में साम्य एवं वैषम्य का होना अत्यंत आवश्यक है। इसी तरह का भाव पक्ष और कला पक्ष की दृष्टि से भी उनमें पर्याप्त साम्य होना चाहिए।"[४] इस प्रकार की समीक्षा में एक शाश्वत तथा व्यापक नियम यह है, कि जो परस्पर तुलनीय हो उन्हीं की तुलना करनी चाहिए और इस कसौटी का प्रयोग रचना के भाव, उद्देश्य, शैली और विषय आदि पर करना चाहिए।"[५] केवल एक भाषा के अथवा भिन्न भाषाओं के दो लेखक कवि होने से उनके काव्य की तुलना नहीं की जा सकती. उनमें आकृति -प्रकृति, विचारधारा, चिंतन -मनन, संस्कृति परिवेश, भाषा ,काल, सापेक्षतावाद आदि अनेक दृष्टियों से साम्य होने की आवश्यकता होती है। तुलनात्मक अध्ययन के इन्हीं मान्यताओं को लेकर विद्वानों में विविध मत प्रवाह दिखाई देते हैं। इन मतप्रवाहों के चलते तुलनात्मक अध्ययन के स्कूलों की स्थापना हुई है।

तुलनात्मक साहित्य किसी एक देश में या किसी एक आंदोलन के रूप में उभर कर सामने नहीं आया है। इसलिए इसका एक ही एकीकृत इतिहास दिखाई नहीं देता है, ना ही इस तरह का इतिहास लिखना संभव हो सकता है। तुलनात्मक अध्ययन के विकास में भी असमानता दिखाई देती है। इसका कारण यह है कि भिन्न देशों के उद्भव और विकसित हुए तुलनात्मक साहित्य में समानता दिखाई नहीं देती है। तुलनात्मक अध्ययन का विकास, उससे संबंधित देशों में उनकी परिस्थितियों तथा राजनीतिक गतिविधियों पर निर्भर रहा है। विद्वानों का मानना है कि वैश्विक स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन के लिए फ्रांस की भूमि सर्वप्रथम अनुकूल रही थी। फ्रांस का वसाहतवाद इस संदर्भ में वांग्मयी व्यापार के लिए पूरक सिद्ध हुआ यह हमें नहीं भूलना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि तुलनात्मक साहित्य का इतिहास विशिष्ट देशों की परिस्थिति अनुरूप घटित हुआ है। जिस तरह भारतीय साहित्य, अमेरिकन साहित्य अथवा राष्ट्रकुल साहित्य का ऐसे नामों से दिखाया जाना संभव नहीं, वैसे ही तुलनात्मक साहित्य का एक संघ एक ही इतिहास दिखाना असंभव है।"[६] वैसे तो विश्व के विभिन्न देशों में तुलनात्मक साहित्य का उद्भव और विकास हुआ है, किंतु उनकी तुलनात्मक अध्ययन संबंधी धारणाएं मान्यताएं पद्धतियां आदि भिन्न-भिन्न रही हैं. जिसके फलस्वरूप समग्रता से उनका इतिहास दिखाया नहीं जा सकता है. इन सारे मुद्दों के चलते विश्व भर में तुलनात्मक साहित्य के विविध स्कूल स्थापित हुए हैं जिनमें से प्रमुख स्कूल निम्नलिखित हैं:

२.३.१ फ्रेंच-फ्रांसीसी स्कूल:

बीसवीं सदी के प्रारंभिक काल से लेकर द्वितीय महायुद्ध तक तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र में अनुभववादी और प्रत्यक्षवादी विचारधारा का प्रचलन विशेष रुप से अनुसरण किया जाता था जिसे विद्वानों ने फ्रेंच या फ्रांसीसी स्कूल नाम दिया है। कुछ विद्वानों ने इसे तुलनात्मक साहित्य का आद्यपीठ माना है। फ्रांसीसी स्कूल के विद्वान 'पॉल वैन, टाईघम' आदि विद्वानों ने 'मूल' और 'मूल' के साक्ष्य की तलाश में फॉरेंसिक रूप की तलाश की। इस तरह इस स्कूल के विद्वान यह खोजने का प्रयास करते रहे हैं कि समय के साथ राष्ट्रों के बीच एक साहित्यिक विशेष विचार या आदर्श कैसे यात्रा करता है? तुलनात्मक फ्रेंच स्कूल में 'प्रभाव' के अध्ययन को केंद्र में रखकर तुलना की जाती है। फ्रांस में १९ वीं सदी से ही तुलनात्मक साहित्य लिखा जा रहा था। "मादाम स्ताइल से लेकर स्टैंदाल तक अनेक फ्रेंच लेखकों ने तुलना का प्रयोग १९ वीं सदी के प्रारंभ किया था। स्टैंदाल का "रासिन और शेक्सपियर" इसका अच्छा उदाहरण है।"[७] फ्रेंच स्कूल में तुलना के लिए लिए गये ग्रंथों का उदय और अंत के काल की भी खोज करने का आग्रह रहता है। कुछ विद्वान भारतीय तुलनात्मक साहित्य के लिए फ्रेंच स्कूल की पद्धति उपयुक्त मानते हैं। डॉ अनंत केदारी जी ने पॉल वैन,टिथेम का प्री-रोमांटिसिजम यह तीन खंडों में लिखे गए ग्रंथ और फर्नांद वाल्देन स्पर्गर का 'ग्योएथे इन फ्रांस'को फ्रेंच स्कूल का सही और संस्मरणीय बड़ा कार्य माना है। "बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रेंच स्कूल की परंपरा में फ्रेंच विद्वान रेन एतेआंब्ल ने तुलनात्मक साहित्य के विचार की कैफियत की उसके बाद बदलाव आने लगा। अमेरिका में तुलनात्मक साहित्य में जो पेच- प्रसंगों का वाद उठा था उसी का वह परिणाम था। तुलना कार का अर्थ पुरातत्व खोजी नहीं होता।"[८] इसके पश्चात फ्रेंच स्कूल की मान्यताओं में परिवर्तन होता हुआ दिखाई देता है। डॉ. अनंत केदारी जी का मत है कि अपने बदलावों में फ्रेंच स्कूल के विद्वानों ने ऐतिहासिक संबंध प्रस्तावित करने का अपना दुराग्रह छोड़कर वैश्विक रूप विचार (Morphology) कल्पना का इतिहास और अंतरराष्ट्रीय वांग्मय इतिहास का जायजा लेना शुरू किया। फ्रेंच स्कूल पर अपना मत प्रकट करते हुए डॉक्टर अनंत केदारी जी कहते हैं कि फ्रेंच स्कूल शब्द फ्रांस देश का या भाषा का संकेत न कर वह एक विषय को सर्वसाधारण रूप में दी हुई दिशा के रूप में उसे लेना चाहिए।

२.३.२ जर्मन स्कूल:

"फ्रेंच स्कूल की तरह ही जर्मनी में तुलनात्मक साहित्य का उद्भव द्वितीय महायुद्ध के बाद हुआ। कई विद्वान यह मानते हैं कि फ्रांस और जर्मनी स्कूल के सांस्कृतिक संबंध एक दूसरे की परंपरा पर दोषारोपण न करते हुए, सावधानी से और कुशलतापूर्वक तुलनात्मक साहित्य में नए दृष्टिकोण स्वीकारने के लिए प्रसिद्ध हैं।" फ्रेंच की तरह जर्मनों को भी राष्ट्रीय धागे यूरोपीय बोध से कैसे जोड़े जाए यह प्रश्न सताता रहता है। हेनरी रेमाक (१९६८ इयरबुक) के मतानुसार तुलनात्मक साहित्य इस विद्याशाखा की ओर देखने का दृष्टिकोण अविचल है ऐसा फ्रेंच और अमेरिकन मार्गों के दृष्टिकोण में एक मध्यस्थ और कदाचित शांतिदूत बनने का है जर्मन तुलनात्मक विद्याव्यासंग का सदैव ही होना चाहिए।"[९] इस तरह जर्मन स्कूल, फ्रेंच और अमेरिकन स्कूल के बीच तुलना के मत को जोड़ने वाला साबित हो जाता है। जर्मन स्कूल ने यह माना है कि तुलनात्मक साहित्य में विविध वांग्मयी का विचार होना चाहिए उसे चिरंतन कालातीत अथवा रहस्यवादी बनाने की जरूरत नहीं जर्मन स्कूल का

मानना है कि तुलनात्मक अध्ययन में वांग्मयी सिद्धांतों और राजनीतिक सामाजिक मीमांसा की टकराहट अनिवार्य है। जर्मन स्कूल तुलनात्मक साहित्य को स्वतंत्र विद्या शाखा की मान्यता देता है।"दूसरे महायुद्ध के बाद फ्रेंच और पश्चिम जर्मनी में तुलनाकारों ने संयुक्त प्रकल्प शुरू किया। अपने देश की परिस्थिति के अनुरूप समीक्षा पद्धति को गढ़ने का प्रयत्न तुलनात्मक साहित्य में जर्मनीयों ने कैसे किया यह देखना उद्बोधक है।"[१०] डॉ. अनंत केदारी जी के इस अवतरण से स्पष्ट हो जाता है कि जर्मन स्कूल पर फ्रेंच स्कूल का प्रभाव शनै शनै बढ़ता हुआ दिखाई देता है। जर्मन स्कूल के शुरुआती दौर में हंगरी के अध्यापक जो बरलिन में यूनिवर्सिटी में पढ़ाते थे, उन्होंने तुलनात्मक साहित्य में अनुशासन विकसित कर जर्मन स्कूल को विद्वानों से जोड़ा।

२.३.३ अमेरिकन स्कूल:

अमेरिकन स्कूल अन्य तूलनात्मक स्कूलों की तुलना में अधुनातन है। किंतु विश्व स्तर पर प्रभावशाली बन गया है। अमेरिकन स्कूल की शुरुवात प्रथम महायुद्ध के बाद फ्रांसीसी स्कूल की प्रतिक्रिया के रूप में हुई मानी जाती है। अमेरिकन स्कूल के आगमन के पूर्व पश्चिम में तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र सामान्यतः पश्चिमी यूरोप और एंग्लो अमेरिका के साहित्य तक ही सीमित था। विद्वानों का मानना है कि अमेरिकन स्कूल की स्थापना ही स्थलांतरित जर्मन तुलनाकारों से हुई। "एरिक ऑरबाक (१९८२-१९५७) के लिओ स्पीटजर (१९८७-१९६०) और अर्नस्ट रॉबर्ट क्युर्टिस (१८८६-१९५६) इनके जैसे विस्थापित विद्वानों के गट ने अमेरिका में स्थलांतर किए हुए अमेरिका में जन्मे हुए रेने वेलेक (जन्म १९०३) और सेरी लेविन जैसे तुलनाकार दिए।"११ डॉ अनंत केदारी जी का मानना है कि अमेरिका तुलनात्मक साहित्य का नंदनवन है। आज अमेरिका में तुलनात्मक साहित्य के लिए आशादायी वातावरण है। बहु संस्कृतियों की भरमार अमेरिका में तुलनात्मक साहित्य के विस्तार की गति आश्चर्य- चकित करने वाली है।

बीसवीं सदी के मध्य में अमेरिकन तुलनाकारों ने फ्रेंच तुलनात्मक साहित्यकारों को सलाह मशवरा भी दिया। अमेरिकन तुलनात्मक साहित्य शीत युद्ध काल में विवादों का विषय भी बना रहा। कुछ विद्वान यह मानते हैं कि अमेरिकी स्कूल फ्रेंच स्कूल की प्रतिक्रिया के रूप में उभर कर सामने आया। अमेरिकन स्कूल में अध्ययन के प्रमुख दो क्षेत्र हैं जिनमें एक है 'समांतरवाद' और दूसरा है' इंटरटेक्सुअलिटी'। इनके समांतरवाद के अंतर्गत लेखक को और उसके कार्यों के बीच समानताएं तलाश की जाती हैं तथा पुराने ग्रंथों को कच्चा माल मानकर उनका उपयोग नव निर्माण के लिए करने के बात स्वीकार की जाती है। अमेरिकन स्कूल में मुक्त पद्धति से तुलनात्मक साहित्य की रचना होती है। जिसमें तुलनात्मक विषय की कोई मर्यादा नहीं होती। और किसी भी चीज की तुलना किसी भी दूसरी चीज से की जा सकती है। इस तरह अमेरिकन स्कूल का तुलनात्मक साहित्य का दायरा विस्तृत है।

२.३.४ रूसी स्कूल:

साम्यवादी दर्शन पर आधारित रुसी स्कूल तुलनात्मक साहित्य का स्कूल है। इस स्कूल के संपादक के रूप में ब्लादिसाव इलिच सृविटच और अहरोन डोलगोपलस्की का नाम लिया जाता है। और व्याचेस्लाव इवानोव्ह और एंट्री एंड्री जालिज्न्याक इन दोनों का भी स्कूल की स्थापना में बहुमूल्य योगदान माना जाता है। मास्को स्कूल ऑफ कंपैरेटिव लिंग्विस्टिक्स

जिसे नॉस्ट्रेटिक स्कूल भी कहा जाता है। यह मास्को का एक भाषा विज्ञान का स्कूल है, जो कई वर्षों से तुलनात्मक भाषा विज्ञान के लिए काम कर रहा है। और रुसी तुलनाकर मानते हैं कि साहित्य समाज की संपत्ति है। रचनाकार सामाजिक घटनाओं को देखता है और अनुभव कर समाज का यथार्थ चित्रण करता है। इस तरह से स्कूल में साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन सामाजिक यथार्थवाद के प्रकार और विविधता के आकंलन से होता है।

२.४ सारांश

यह द्वितीय इकाई है इस इकाई से आपने जाना कि:

- तुलना अध्ययन के तत्व क्या है और कौनसे है।
- साहित्य का सर्वांग विकास में तुलनात्मक अध्ययन क्यों उपयोगी है।
- तुलनात्मक अध्ययन के प्रमुख स्कूल कौनसे है।
- तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन १९ वी – २० वी सदी के प्रारम्भिक काल से हो रहा है।

२.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) तुलनात्मक अध्ययन के तत्वों का उल्लेख कीजिए।

२) तुलनात्मक अध्ययन के प्रमुख स्कूल और उनकी विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

३) तुलनात्मक अध्ययन के प्रमुख स्कूल अपनी अलग मान्यताओं के साथ अध्ययन रत है तुलनात्मक समीक्षा कीजिए।

२.६ लघुत्तरीय प्रश्न

१) तुलनात्मक अध्ययन की संकल्पना का विकास कहाँ से हुआ?

उत्तर: पश्चिमी देशों से।

२) डॉ. केदारी के अनुसार तुलनात्मक साहित्य के कितने मूल विचार है ?

उत्तर: तुलनात्मक साहित्य के दो प्रमुख मूल विचार है।

३) अमेरिकन स्कूलों की स्थापना कैसे हुई ?

उत्तर: अमेरिकन स्कूल की स्थापना स्थलांतरित जर्मन तुलनाकारों से हुई।

४) तुलनात्मक साहित्य में कुल कितने लेखकों के साहित्य का अध्ययन हो सकता है ?

उत्तर: दो या दो से अधिक लेखकों का और समग्र साहित्य का भी तुलनात्मक अध्ययन हो सकता है।

२.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१) "साहित्यकार समाज से निरपेक्ष नहीं रह सकता है। साहित्यकार अपनी रचना में समाज की प्रवृत्तियों को ही उद्घाटित करता है।" यह परिभाषा .... है।

i) हेलन टिफिन ii) डॉ. नगेन्द

iii) डॉ. अनंत केदारे iv) मैथ्यू अर्नाल्ड

२) तुलनात्मक शब्द की उत्पत्ति किस धातू से हुई है।

i) तुल ii) तुस

iii) तुन iv) तूल

३) फ्रेंच विद्वानों ने तुलनात्मक अध्ययन में किस पहलू को अधिक पसंद किया ?

i) लोक काव्य और प्रसिद्ध अध्ययन ii) प्राचीन साहित्य

iii) सैद्धान्तिक साहित्य अध्ययन iv) नाटक और उपन्यास

४) विद्वानों के अनुसार तुलनात्मक साहित्य का आद्यपीठ है।

i) फ्रेंच स्कूल ii) जर्मन स्कूल

iii) अमेरिकन स्कूल iv) रूसी स्कूल

५) तुलनात्मक अध्ययन में कौनसा स्कूल अधूनातन माना जाता है ?

i) फ्रेंच स्कूल ii) जर्मन स्कूल

iii) अमेरिकन स्कूल iv) रूसी स्कूल

२.८ संदर्भ ग्रंथ

१. वैजनाथ सिंहल -शोध- स्वरूप एवं मानक व्यापारिक कार्य विधि - पृ.क्र.२९-३०

२. क्रांति मुदिराज -तुलनात्मक साहित्य की चुनौतियां - पृ.क्र.८

३. निशिगंधा व्यवहारे- तौलनिक साहित्याभ्यास संकल्पना व स्वरूप - पृ.क्र.७

४. इंदर नाथ चौधरी- तुलनात्मक साहित्य- भारतीय परिप्रेक्ष्य - पृ.क्र.२३

५. समांतर कोश - हिंदी की थिसारस-संपा. अरविंद कुमार - पृ.क्र.१५

६. आय.एन. चंद्रशेखर रेड्डी - तुलनात्मक अध्ययन: निकष एवं निरूपण

७. पंडित चतुर्वेदी - समीक्षा शास्त्र

८. डॉ अनंत केदारे - तुलनात्मक अध्ययन व्यवहारिक कार्य विधि

९. अर्जुन तड़वी - अनुसंधान: सर्जन एवं प्रक्रिया

*****

३

तुलनात्मक अध्ययन के सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

३.० इकाई का उद्देश्य
३.१ प्रस्तावना
३. २ तुलनात्मक अध्ययन के सिद्धांत
३. ३ तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन के प्रतिमान
३.४ तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता एवं महत्त्व
३.५ तुलनात्मक अध्ययन की समस्याएँ
३.६ तुलनात्मक साहित्य के मूल्य
३.७ उद्देश्य
३.८ सारांश
३.९ दीर्घोत्तरी प्रश्न
३.१० लघुत्तरीय प्रश्न
३.११ बहुविकल्पीय प्रश्न
३.१२ संदर्भ ग्रंथ

३.० इकाई का उद्देश्य

i. इस इकाई को पढ़ने के बाद हम तुलनात्मक अध्ययन के सिद्धान्तों के बारे में जान सकेंगे।

ii. इस इकाई के अध्ययन से हम यह भी जान सकेंगे कि तुलनात्मक अध्ययन के सिद्धान्तों का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

Iii. इसमें हम तुलनात्मक साहित्य के प्रतिमान, उसकी उपयोगिता एवं महत्त्व, अध्ययन की समस्याएँ, एवं उसके मूल्यों को समझ सकेंगे।

३.१ प्रस्तावना

किस प्रकार हमारे दैनिक जीवन में पग-पग पर तुलना का उपयोग किया जाता है। हम शून्य में नहीं रहते, प्रतिदिन हमारा सामना कई तरह के लोगों से होता है। अपने परिवेश को समझने-देखने और परखने में कई बार हम दूसरों से भी प्रभावित होते है। जब हम अपने आस-पास की दुनिया को परखते है तो हम यह देखते हैं कि हमारा कई लोगों से संबंध है, और हम कई घटनाओं से एक साथ जुड़े हैं। यही संबंध हमें परिवार से जोड़ता है। यही हमारे कामकाज के दौरान या कही आने-जाने के दौरान भी हम संबंध स्थापित करते हैं।

इस प्रकार के संबंध में एक नियमित पद्धति या एकरसता हो सकती है, और यह भी हो सकता है कि उसके कुछ नियम कानून हों। यहाँ हम तुलनात्मक सिद्धान्तों के माध्यम से यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की एक विशेष दिनचर्या होती है, परन्तु यदि हम समग्र रूप में देखे तो यह भी पता चलता है कि अनेकों लोग इसी दिनचर्या को अपनाते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि इन व्यक्तियों की दिनचर्या में एक नियमितता हैं, जिसकी तुलना समानता के लिए की जा सकती है।

आज हमारा राष्ट्र-राज्य के भौगोलिक सीमान्तो की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रहा है। पूँजी, श्रम, इन्टरनेट इत्यादि के माध्यम से दुनिया का स्वरूप भी उभर रहा है। भाषा, समूह, संस्कृति, अस्मिता जैसी चीजे आज नयी पहचान एवं नई व्याख्या की तलाश मे हैं। वैश्विक स्तर पर भी सब कुछ बदलने लगा है। यह एक नया और खुद को लगातार विकसित करता हुआ अनुशासन है। एक बड़ी वैश्विक-साहित्यिक सांस्कृतिक प्रक्रिया है, और इस प्रक्रिया के रथ चक्र का पहिया तुलनात्मक सिद्धान्तों से ही संचालित हो रहा है। तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र में आ रहे बदलावों के परिप्रेक्ष्य में साहित्यिक आलोचना और साहित्यिक सिद्धान्तों के बारे में भी जानना जरूरी हो जाता है। साथ ही यह भी जानना होगा कि पारम्परिक रूप से प्रचलित साहित्यालोचना एवं साहित्य सैद्धांतिकी की कोटियाँ एवं प्रतिमान अब कितने अर्थपूर्ण एवं उपयोगी रह गए। और वे कौन-कौन से नए साहित्यिक प्रतिमान एवं उपसर होंगे जो आलोचना एंव साहित्यिक सिद्धान्तों को नवीन तुलनात्मक साहित्य की कृतियों के मूल्यांकन में सक्षम बना सकेंगे।

संस्कृति, राष्ट्र, एवं भाषा की सीमाबद्धता को तोड़ते हुए दुनिया भर मे आज तुलनात्मक साहित्य का महत्त्व बढ़ रहा है। पारंपरिक तुलनात्मक साहित्य से अलग एवं व्यापक धरातल पर इसका विकास हो रहा है। पारम्परिक रूप से तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन अपनी पूर्व संकल्पना में अन्यता पर आधारित रही है। यह अन्य किसी दूसरी भाषा की साहित्यिक कृतिया या कोई अन्य सांस्कृतिक भी हो सकता है। ऐसे अध्ययनों में प्राय: दोनों की तुलना कर दी जाती है और उनकी विशिष्टताओं को भी रेखांकित कर दिया जाता है। लेकिन आज तुलनात्मक साहित्य सिद्धांत वही नहीं रहा। मान-विक्री एवं समाज विज्ञान जैसे विषयों से खुद को समृद्ध किया इसी कारण साहित्यिक आलोचना एवं साहित्यिक सिद्धान्तों का स्वरूप तथा उनसे अपेक्षाएँ भी आज काफी कुछ बदल गई है।

३.२ तुलनात्मक अध्ययन के सिद्धांत

लगभग सभी सामाजिक विज्ञानों में तुलनात्मक अध्ययन का किसी न किसी रूप में प्रयोग किया जाता है। समाज शास्त्र एवं मानव शास्त्र में तो काफी समय से तुलनात्मक व्याख्या को या उसके सिद्धान्तों को सर्वोत्तम सिद्धांत समझा जाता है। इसका विकास ऐतिहासिक एवं उद्विकासवादी परिप्रेक्ष्यों में पायी जाने वाली कमियों को दूर करने के प्रयास के परिणाम स्वरूप हुआ। तुलनात्मक सिद्धांत वह पद्धति है जिसमे किन्ही दो घटनाओं संस्थाओं तथा समाजों आदि की तुलना करके उनमें अन्तर और समानता का पता लगाया जाता है संस्थाओं तथा समाजों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाता है। प्रत्येक तुलना को तुलनात्मक विधि नहीं कहा जा सकता हैं क्योंकि जीन्सबर्ग के अनुसार तुलनात्मक अध्ययन का अर्थ केवल तुलना करना ही नहीं है अपितु तुलना के पश्चात घटनाओं की

व्याख्या करना भी है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि तुलना करके तुलना की जाने वाली घटनाओं की व्याख्या नहीं की जा सकती है तो इसे तुलनात्मक अध्ययन नहीं कहा जायेगा। इमाइल दुर्खीम का कहना है कि तुलना की जाने वाली वस्तुएँ पूर्णत: एक-दूसरे से भिन्न नहीं होनी चाहिए। उनका यह कहना था कि तुलना की जाने वाली वस्तुओं में कुछ न कुछ समानता भी होना अत्यावश्यक है।

३.३ तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन के प्रतिमान

समाज और साहित्य के बीच अन्योन्याश्रित संबंध होता है। साहित्यकार अपने आस-पास का वातावरण, रीति-रिवाज, परम्परा, विचारधारा, आदि को ही अपने साहित्य में उतारता है, और इस तरह से हम तत्कालीन परिवेशो से विधिवत परिचित हो जाते हैं। इस प्रकार साहित्य में समाज का प्रतिबिंब अंकित होने के कारण इसे समाज का आईना भी स्वीकार किया जाता है। आज के दौर में हमारे भारत वर्ष में भूमडलीकरण, सांप्रदायिकता, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, आरक्षण नीति, स्त्री उत्पीडन आदि ऐसे प्रमुख मुद्दे हैं, जिससे समाज को भयंकर परिणामों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे समय में साहित्य इन त्रासदियों से उबारने में हमारे लिए सहायक सिद्ध होता है। विमर्श को लेकर वैश्विक स्तर पर प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन हुआ है। विश्व की लगभग सभी स्त्रियाँ अपने अस्तित्व तथा आत्मसम्मान से जूझती दिखाई देती हैं। साहित्यिक तथा सुधारवादी प्रयत्नों से आज की स्त्री का दायरा बढ़ता ही जा रहा है। वह परिवार की दहलीज लाँघकर खुले आसमान में विचरण करने लगी है। फिर भी उसके सामाजिक स्तर पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता दिखाई नहीं देता है। उसे अपने परिवार तथा कार्यालय दोनों में संतुलन बनाए रखना आवश्यक हो जाता है।

हमारा देश बहुभाषिक देश है, यहाँ प्रत्येक भाषा में सम्पन्न साहित्य है। इसी भाषा और साहित्य में राष्ट्र की पहचान बनती है। इसलिए विविधता में एकता का सन्देश देने वाले हमारे देश में तुलनात्मक अनुसंधान के प्रतिमानों के लिए बहुत बड़ा मंच उपलब्ध हो सकता है। तथा एक दूसरे की संस्कृतियों के आदान-प्रदान में भी यह तुलनात्मक अध्ययन काफी सहायक भी हो सकता है। भारतवर्ष में तुलना की शुरुआत बंगाल से मानी जाती है। जहाँ सर्वप्रथम बंगाल के विख्यात कवि माइकेल मधुसूदन दत्त ने १८६० ई. में अपने एक मित्र को लिखे पत्र से स्पष्ट हो जाता है कि जिन कवियों की रचनाओं में उनको अपनी पसंद का काव्य मिलता है,उन्हीं की कविता वे पढ़ते हैं। वहीं उन्होंने यूरोपीय तथा भारतीय नाटकों की तुलना प्रस्तुत करते हुए, कहा कि यूरोपीय नाटक में जहाँ जीवन के कठोर यथार्थ, उदात्त आवेग तथा वीर रस का परिचय मिलता है। वहीं भारतीय नाटक में प्रेम और कोमलता का।' इस प्रकार भारतीय और पाश्चात्य साहित्य को मिलाकर तुलनात्मक अध्ययन के प्रचार - प्रसार की शुरुआत मायकेल मधुसूदन दत्त से ही मानी जाती है।

कुछ समय पश्चात उनका प्रभाव बंकिमचन्द्र चटर्जी पर पड़ा और उन्होंने १८७३ में शकुतला 'पश्चिम की मिरांडा तथा 'डेसडोमाना' की तुलना की तथा वापरना एवं शैली की कविताओं की तुलना वैदिक साहित्य से कर भारतीय साहित्य की तुलनात्मक प्रतिमानों की परिधि बढ़ा दी। यह वही समय था जब पश्चिम में तुलनात्मक अध्ययन के प्रतिमानों को एक गति प्राप्त हो रही थी

जिसका सीधा किन्तु स्पष्ट प्रभाव भारतीयों पर भी दिखने लग गया था। ग्योरथे की विश्व साहित्य की संकल्पना को रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने आगे बढ़ाते हुए सन १९०७ में भारतीय तुलनात्मक साहित्य अध्ययन को 'विश्वसाहित्य' की संज्ञा प्रदान कर इसका मार्ग भी प्रशस्त किया। आगे चलकर प्रियरंजन सेन ने सन १९३२ ई. में बंगाली उपन्यासों पर पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव का अध्ययन किया। इससे पहले वारेन हेस्टिंगस के द्वारा 'भगवदगीता' के धार्मिक तत्वों की तुलना ईसाई धर्म से सन् १७८५ से की गई थी। अलेग्जेंद्र बेबर ने अपने ग्रंथ 'द हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर' १८५२ में संस्कृत नाटकों पर यूनानी साहित्य के प्रभाव की छानबीन की थी। किन्तु भारतीय विद्वानों द्वारा यह शुरुआत बंगाल से होती हुई ही दिखाई देती है।

जहाँ तक तुलनात्मक साहित्यिक प्रतिमानों की बात है तो तुलनात्मक अभ्यास से हमें किसी भी साहित्यिक कृति को समझने तथा जाँचने में काफी आसानी होती है। इससे साहित्य तथा साहित्यकार की उपलब्धियाँ भी हमारे सामने आ जाती हैं, तथा उसके द्वारा निर्मित साहित्य की कालजयिता को भी हम आसानी से समझ सकते हैं। भारतीय अध्ययनों के अनुसार तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययनों के कुछ प्रमुख प्रतिमान तय किए गए है, जो इस प्रकार हैं।

i. संस्कृति:

हमारी वास्तविक पहचान संस्कृतियों से ही बनती है, संस्कृति से तात्पर्य है कि मनुष्य की भाषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान, आदि। दिनकर के अनुसार, "अनेक शताब्दियों तक एक ही समाज के लोग जिस तरह खाते, पीते, रहते-सहते, पढ़ते-लिखते, सोचते-समझते और राज-काज चलाते अथवा धर्म-कर्म करते हैं, उन सभी कार्यों से उनकी संस्कृति उत्पन्न होती है। हम जो कुछ भी करते हैं उससे हमारी संस्कृति की झलक मिलती है। यहाँ तक कि हमारे उठने-बैठने पहनने-ओढ़ने, घूमने-फिरने और रोने-हंसने से भी हमारी संस्कृति की पहचान होती है। यद्यपि हमारा कोई भी एक काम हमारी संस्कृति का पर्याय नहीं बन सकता। असल में संस्कृति जिन्दगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसलिए जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज में रहकर हम जी रहे हैं उसकी संस्कृति हमारी संस्कृति है। यद्यपि अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा करते हैं, वह भी हमारी संस्कृति का अंग बन जाता है, और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी संतानों के लिए छोड़ जाते हैं। इसलिए संस्कृति वह चीज मानी जाती है जो हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों से अनुभवों का साथ है।"

अतः हम कह सकते हैं कि मनुष्य की संस्कृति ही अन्य मानवांतर प्राणियों से अलग बनती है। मानव संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती है और जीवित रहती है। यह मौखिक होती है। हमारे बुजुर्गों से यह हमें विरासत में मिलती जरूर है, पर उसमें वक्त के साथ-साथ बदलाव भी आता रहता है। जैसे रामायण-महाभारत कालीन संस्कृति में आज पूर्णतः बदलाव आ चुका है। यह एक मनोवैज्ञानिक कृति है।

ii. सामाजिक दायित्व एवं राजनीतिक युग बोध:

किसी भी देश की शासन व्यवस्था को सुव्यस्थित तथा सुचारु ढंग से चलाने के लिए निर्धारित की गई विशेष नीतियों को राजनीति कहा जाता है। प्रशासन की शुरुआत तो कबीलाई समाज से ही हो चुकी थी। जहाँ कबीलों का एक मुखिया होता था, धीरे-धीरे यह संकल्पना भी आगे बढ़ने लगी। प्राचीन कल में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र सभी वर्णों के कर्म निश्चित कर दिए गए थे। जिनमें क्षत्रियों के लिए राज्य की व्यवस्था तथा रक्षा करने का जिम्मा सौपा गया। जाति तक सीमित इस क्षेत्र का आगे चल कर कर्मों के आधार पर चयन होने लगा, जिसके कारण अपने अतुल्य पराक्रम तथा कूटनीति के बल पर अनेक राजाओं ने अपना नाम भारतीय राजनीतिक इतिहास में हमेशा-हमेशा के लिए रख छोड़ा। अंग्रेजों के आगमन के बाद हमारे देश ने सत्तारण तथा गुलामी झेली। अंग्रेजों के दाँवपेच के तले भारतीय अशिक्षित जनता पूरी तरह दब गई।

मनुष्य तथा समाज एक दूसरे पर ही आश्रित हैं। मनुष्य ही समाज बनाता है और समाज से ही मनुष्य की पहचान बनती है। उन्नीसवी शती मे हमारे देश में आधुनिकता की हवा चलने लगी। परिणाम स्वरूप पारिवारिक टूटन तथा तनाव भी निर्मित होने लगे। इस दृष्टि से तुलनात्मक साहित्य के अन्तर्गत एक से अधिक भाषा के साहित्य का अध्ययन भी किया जाता है। गयोएथ ने सन १८५७ में 'वर्ल्ड लिटरेचर' संज्ञा का प्रयोग किया। वही भारत वर्ष में १९०७ में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसी संकल्पना को आगे बढ़ाते हुए तुलनात्मक साहित्य के लिए 'विश्व साहित्य' की संकल्पना को पेश किया था और कहा था कि- 'यह पृथ्वी विभिन्न टुकड़ों में बटी हुई है। लोगों का रहने का अलग-अलग स्थान नहीं है, उनका साहित्य अलग-अलग रचित साहित्य नहीं है। प्रत्येक लेखक द्वारा रचित साहित्य एक पूर्ण इकाई है, तथा वह इकाई समूचे मानव समाज की सर्वभौम सृजनात्मकता का परिचायक है।'

इस कथन से यह स्पष्ट है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने, 'वसुधैव कुटुंबकम' की कल्पना प्रस्तुत साहित्य के माध्यम से ही की है। जे.एम. कैरे के अनुसार-'तुलनात्मक साहित्य साहित्य इतिहास की एक शाखा है तथ्यानुरूप सम्पर्कों के आधार पर तुलनात्मक साहित्य का अर्थ है उसकी परिधि से साहित्यालोचन को हटाकर मात्र विषय संग्रह को तुलनात्मक साहित्य मान लेना।' हेनरी.एच.एच रेमाक का कथंन है कि- "तुलनात्मक साहित्य एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि के ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है। 'इस कथन से यह स्पष्ट है कि तुलनात्मक अध्ययन के प्रतिमानों के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर जोर देते हैं। इस प्रकार सभी तुलनातमक साहित्यकारों का प्रमुख उद्देश्य तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से विविधता में एकता स्थापित करना है। विश्व साहित्य की संकल्पना को आगे बढ़ाना है तथा यह अध्ययन साहित्य तक सीमित न रखते हुए अन्य क्षेत्रों में भी इस को सम्मिलित करना है।

३.४ तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता एवं महत्व

समाज विज्ञान में सामाजिक घटनाओं के अध्ययन हेतु तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग वर्तमान में बहुत हुआ है। तुलनात्मक अध्ययन के उपयोग के द्वारा एक ही समूह अथवा समाज में

घटने वाली समान प्रकृति की सामाजिक घटनाओं या समस्याओं की परस्पर तुलना की जाती है, और उनकी समानता व असामानता को ज्ञात किया जाता है। एक ही समाज में विभिन्न समय में घटने वाली घटनाओं अथवा विभिन्न समाजों में विभिन्न स्थानों पर घटने वाली समान प्रकृति की घटनाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी इस विधि के द्वारा किया जाता है। उदाहरण स्वरूप औद्योगीकीकरण एवं नगरीकरण ने यूरोपीय परिवारों को एवं भारतीय परिवारो को किस रूप में प्रभावित किया है उनमे कौन-कौन सी जीवन प्रकृतियाँ उत्पन्न हुई हैं। दोनों समाजों में परिवर्तन की समानताएँ और भिन्नताएँ क्या है, आदि सभी पक्षो को जानने के लिए हमें तुलनात्मक अध्ययन का ही सहारा लेना पड़ेगा। एस तरह से विभिन्न समूह समाजों, संस्थाओं व समुदायों में घटने वाली सामाजिक घटनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए तुलनात्मक पद्धति का सहारा लेना पड़ेगा।

तुलनात्मक पद्धति का उपयोग समाजशास्त्र और मानवशास्त्र में अनेक विद्वानों ने किया है। सामाजिक और सांस्कृतिक मानव शास्त्रियों ने सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को जानने समझने हेतु ही इसका प्रयोग किया था। प्रारम्भिक मानव शास्त्रियों में जिन्होंने इसका प्रयोग किया उनके नाम मॉर्गन, बेकोफन, टेगार्ट, हेनरीमॅन, मॅकलीनन, टॉयलर, फ्रेजर तथा लेवी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। विकासवादी समाज वैज्ञानिकों ने ऐतिहासिक और तुलनात्मक पद्धति का साथ-साथ प्रयोग किया। समाजशास्त्र के जनक 'अगस्तकामटे' ने समाज के विकास के विभिन्न चरणों की तुलना की, इन्होंने सामाजिक विकास के तीन स्तरों का नियम में काल्पनिक दार्शनिक एवं वैज्ञानिक स्तरों का उल्लेख किया और इनकी तुलना भी की। हरबर्ट स्पेंसर ने समाजवाद समवय की तुलना की और इन दोनों के बीच की समानताओं का उल्लेख भी किया। इसी आधार पर इन्होंने समाज को एक सावयव कहा। उन्होंने विभिन्न समाजों की भी परस्पर तुलना की।

तुलनात्मक साहित्य के महत्व को आधुनिक युग में लगभग सभी देशों में स्वीकार कर लिया गया है। क्योंकि तुलनात्मक साहित्य आधुनिक सभ्यता का प्रमुख विमर्श बन गया है। तुलनात्मक साहित्य या तुलनात्मक पद्धति आज की एक प्रमुख साहित्यिक पद्धति है, जिसके माध्यम से दो भाषा संस्कृति की अन्तर्निहित विशेषताओं को एक-दूसरे की सापेक्षता में रखकर विश्लेषित किया जाता है। इस प्रकार तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से साहित्यिक कृतियों को परखने के सूत्र भी तलाशे जाते हैं। तुलनात्मक साहित्य की विशेषता से पूर्व हमें यह भी समझना आवश्यक है कि तुलनात्मक साहित्य के लेखक के लिए अनिवार्य धर्म क्या है? आज कल व्यवसायीकरण के दबाव मे प्राय: लेखक तुलनात्मक आलोचना में ही प्रवृत्त हो जाते हैं। इस प्रकार से यह तुलनात्मक साहित्य को गंभीरता से देखते हुए बहुत हल्का प्रयास ही कहा जा सकता है। तुलना करने के लिए लेखक को केवल दो ही भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य नहीं है। बल्कि उन भाषाओं के व्याकरण और संस्कार व उसके अर्थ तथागत क्षेत्र की संस्कृति को जानना भी आवश्यक है।

तुलनात्मक साहित्य का महत्व दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है। राजनीतिक विस्तार के लिए अनुवाद कार्य को छोड़ दिया जाए तो भी तुलनात्मक साहित्य का महत्व की दृष्टियों से महत्वपूर्ण ही माना जाएगा। तुलनात्मक साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य, साहित्य के विस्तार की दृष्टि से है। एक साहित्य एक विशेष प्रकार की ऊर्जा व लोकरंग से निर्मित होता है। दूसरे देश से साहित्य का परिवेश उस पर विचारात्मक एवं संवेदनागत प्रभाव डालता है।

इस ढंग से तुलनात्मक साहित्य का प्राथमिक कार्य साहित्यिक विस्तार का परिवेश निर्मित करना है । तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से साहित्यिक प्रतिमानों के विस्तार को गति मिलती है । साहित्य का एक महत्वपूर्ण कार्य चूंकि सभ्यता का प्रसार करना भी है, तुलनात्मक साहित्य उसमें हमारे लिए मददगार साबित होता है । सभ्यता विस्तार के बाद तुलनात्मक साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य सांस्कृतिक विस्तार करना है । दो भाषा, दो परिवेश, दो प्रकार का साहित्य अपने संस्कृति में वैविध्य लिए हुए होते है, अत: दोनों को उनकी सापेक्षता में ग्रहण कर एक दूसरे को समझने की दृष्टि का विस्तार किया जाता है । तुलनात्मक साहित्य के महत्व व लोकप्रियता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण मनुष्य के सांस्कृतिक विस्तार की आकांक्षा है । दिन-प्रतिदिन हमारा भौतिक विस्तार होता जा रहा है । मनुष्य, मनुष्य के निकट आता जा रहा है । लेकिन क्रमश: सांस्कृतिक अवमूलन का प्रश्न भी तीव्र होता जा रहा है । सभ्यता के प्रसार ने सांस्कृतिक संकट को नए सिरे से खड़ाकर दिया है । परिणाम स्वरूप सांस्कृतिक समृद्धि व विस्तार के लिए सांस्कृतिक कर्म के रूप में तुलनात्मक साहित्य की महत्ता दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है । तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग हम अपने जीवन में दिन-प्रतिदिन करते आ रहे है । इसका सीधा प्रयोग या उपयोग प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों में भी किया जाता है । हम विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, आर्थिक तथ्यों जनसंख्या के आँकडों आदि की परस्पर तुलना करके विभिन्न प्रदेशों की आर्थिक समृद्धि जीवनस्तर तथा खुशाहली और समृद्धि का पता लगाते हैं।

३.५ तुलनात्मक अध्ययन की समस्याएँ

भारत में सन १९०७ में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 'विश्व साहित्य' का उल्लेख करते हुए साहित्य के अध्ययन में तुलनात्मक दृष्टि की आवश्यकता पर जोर दिया था । भारत में तुलनात्मक अध्ययन के प्रारंभ के संबंध में ए.बी. साई प्रसाद ने कहा है कि 'बीसवी' सदी से ही हम तुलना शब्द को 'कंपरीटिव' शब्द का पर्यायवादी शब्द मान इस्तेमाल करते आ रहे हैं । इसके पहले यह शब्द भारत में प्रचलित ही नहीं था ।' डॉ.पी.एम.वासुदेव ने भी भारत में तुलनात्मक अध्ययन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तीव्रगति से चलने की बात कही है । हिन्दी मे भक्ति एवं रीतिकालीन कवि तुलसी, सुर, केशव आदि ने अपने कवि रूप के संबंध में, जो अनूठी उक्तियाँ कही है, उनमें हिन्दी के तुलनात्मक अनुसंधान के बीज निहित हैं । पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश', मिश्र बंधु आदि ने देव और बिहारी की तुलना कर श्रेष्ठ और कनिष्ठ को स्थापित किया । महावीरप्रसाद द्विवेदी, शचिरानी देवी तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी इसे विकसित किया । तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से विश्वभर में रचा गया साहित्य एक तुला में तौलकर उसे एक दूसरे के काफी करीब लाया जा सकता है । प्रस्तुत अध्ययन संबंधी तुलनाकारों में संभ्रम की स्थिति होने के कारण इसके अंतर्गत अध्ययनकर्ताओ के लिए समस्याएँ निर्मित होती है । रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसका मार्ग प्रशस्त किया, किन्तु ठोस नीति के अभाव में आज भी या अध्ययन सही मायने में गति प्राप्त नहीं कर सकता है । यहाँ यह भी स्पष्ट है कि भारतीय तुलनात्मक अध्ययन अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहा है । इस अध्ययन के अन्तगर्त अध्येताओ को कई तरह की समस्याएँ सामने आ सकती है।

i. संस्कृत साहित्य:

भारत वर्ष में सभी प्रादेशिक भाषाओ की जननी के रूप में संस्कृत भाषा को ख्याति प्राप्त है। आद्य साहित्य निर्मिती का श्रेय भी इसी भाषा को जाता है। कालजयी साहित्य जैसे वेद, पुराण, महाभारत, रामायण नाट्यशास्त्र, कुमारसंभव, मेघदूत, काव्यालंकार, रीतिसिधान्त आदि के साथ वेदव्यास, भरतमुनि, कालिदास, अभिनवगुप्त, मममट जैसे कालजयी रचनाकारों के होते हुए भी इस काल में तुलनात्मक अध्ययन पर कोई कार्य नहीं हो सका। इसका सबसे प्रमुख कारण था कि जहाँ कहीं भी एक साहित्यिक कृति दूसरे से किस प्रकार भिन्न है, तथा क्यों भिन्न है, इसका विवेचन प्राप्त नहीं होता तथा प्रस्तुत आचार्यों ने अपने जीवन संबंधी जानकारी को भी गोपनीय बनाए रखा, जिसके फलस्वरूप उनके व्यक्तित्त्व तथा साहित्य के अनुसंबधो की जानकारी प्राप्त नहीं होती। आज भारतीय साहित्य की नीव संस्कृत साहित्य पर खड़ी है। ऐसे समय में संस्कृत साहित्य की आलोचना की अनुपस्थिति में तुलनात्मक अध्ययन को निश्चित दिशा प्राप्त होने में समस्या हो सकती है।

ii. अनुवाद:

तुलनात्मक अध्ययन के लिए तुलनाकार के पास एक से अधिक भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान होना आवश्यक है। तब प्रश्न यह उठता है कि एक ही व्यक्ति कितनी भाषाओं का ज्ञान रखे। जब हम विश्वसाहित्य की बात करते हैं तो उसमें अनेक भाषाओं का साहित्य अंतरित होते है। ऐसे समय पर अनुवाद कारगर साबित हो सकता है। जैसे तुलनाकार को बांग्ला के उपन्यासकार शरतचन्द की तुलना हिन्दी के निराला से करनी हो तो हिन्दी भाषा तुलनाकार, अनुवाद का सहारा ले सकता है। तब सवाल यह उठता है कि क्या वह अनुवाद मौलिक है? कभी-कभी अनुवाद का पंडित उसकी प्रकांड विद्वता अनुवाद कार्य में सहायता की अपेक्षा बाधा उपस्थित कर देती है। क्योंकि उसकी वास्तविक वृत्ति, पाण्डित्य प्रदर्शन की ललक, के कारण अनुवाद की संप्रेषनीयता को प्रभावित करती है। अपवाद की सीमा निर्धारण में अनुवादाभास का महत्व निश्चित रूप से स्वीकार्य है। क्योंकि जब लक्ष्य भाषा को विशिष्ट अनुवाद के लिए प्रयोग में लाया जाता है तो अनुवादाभास की स्थिति उत्पन्न होती है। वह भूल से परिचित होने के कारण कभी भी अर्थ बोध में किसी प्रकार की बाधा का अनुभव नहीं कर पाता है, इसलिए वह अनुभवादाभास की ओर से उदासीन हो जाता है। उसके द्वारा अनूदित सामग्री सफल नहीं हो पाती है। ऐसे समय पर अनुवाद पर तुलनाकार का निर्भर रहना कठिन सिद्ध होता है।

iii. तत्व निर्धारण:

भारत भले ही अनेक भाषा तथा प्रदेशों में बंटा हो, लेकिन भारतीय संस्कृति को एक माना गया है। ऐसी परिस्थिति में तुलनात्मक अध्ययन के अंतगर्त निश्चित तत्वों का निर्धारण करना आवश्यक है। भले ही हमारी संस्कृति एक हो, परन्तु हम जाति व्यवस्था, पहनावा, खान-पान, रीति-रिवाज, सामाजिकता, एवं भौगोलिकता में बटे हुए हैं। इन सभी निकष को ध्यान में रखते हुए तत्वों का निर्धारण किया जाना भी आवश्यक है। तुलनात्मक अध्ययन के अन्तगर्त साम्य तथा वैषम्य सिद्ध करना अनिवार्य है, या कुछ और तत्त्व इसके अंतर्गत होने ज़रूरी है, यह भी पहले से तय होना चाहिए।

iv. भारतीयता:

भारतीय संकल्पना को भी तुलनात्मक सन्दर्भों में परिभाषित करना अत्यावश्यक है। भारत देश एक बहुभाषिक देश है, फिर भी यहाँ अनेकता में एकता दृष्टिगोचर होती है। भारतीय वांगमय अनेक भाषाओं में अभिव्यक्त एक ही विचार है। भारतीय वांगमय को इकाई के रूप में जब स्वीकार किया जाता है तब इसके विशिष्ट निकष होने आवश्यक हो जाते हैं। भारतीय द्वारा लिखा गया अंग्रेजी साहित्य का भारतीयकरण किन निकषो पर होना चाहिए यह भी तय होना आवश्यक है।

v. तुलना के मानदण्ड:

तुलना के एक निश्चित मानदण्ड होने आवश्यक हैं जिसके आधार पर तुलनात्मक अध्ययन की नींव रखी जा सकती है। जैसे क्या तुलना दो भिन्न भाषा के साहित्य में होनी चाहिए? क्या तुलना एक ही भाषा के भिन्न साहित्यकारों में होनी चाहिए? क्या तुलना एक ही साहित्यकार के दो भिन्न साहित्य कृतियों पर होनी चाहिए? तुलना के लिए कौन-कौन से आधार तत्व होने चाहिए?

उपरोक्त सभी बातों पर निश्चित मानदण्ड स्थापित होने अत्यावश्यक हैं। जिससे प्रस्तुत अभ्यास को निश्चित दिशा तथा गति प्राप्त हो सके।

३.६ तुलनात्मक साहित्य के मूल्य

तुलनात्मक साहित्य के कुछ महत्वपूर्ण मूल्य हमारे सामने इस तरह से आते है।

१. तुलनात्मक साहित्य साहित्य की सार्वभौम संकल्पना है जो साहित्य को राष्ट्रीय तथा भाषिक सीमाओं से परे, उसे उसके समग्र रूप में ग्रहण करती है।

२. यह साहित्य के बाह्य रूपों को महत्व न देकर उसके आंतरिक तत्वों को ही रेखांकित करता है।

३. सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से अविकृत सभी प्रकार की मूल्यवान मानव अनुभूतियाँ उसकी विषय-वस्तु हैं और उसकी अभिव्यक्ति का निर्माण सार्वभौम भाषिक रूपों में होता है।

४. भिन्न साहित्यों के जातीय, सामाजिक, राजनीतिक एवं भाषिक रूप भेदो से तो इसका कोई संबंध ही नहीं रहता है।

५. तुलनात्मक साहित्य का आविर्भाव अनेकता में एकता के संधान की भावना से प्रेरित, अनेक साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन से हुआ है। आज इक्कीसवी सदी में भूमंडलीकरण, बाजारवाद के कारण संपूर्ण विश्व एक 'विश्वग्राम' के रूप में बन गया है। ऐसे में तुलनात्मक साहित्य को अनेक कारणों से अनन्य साधारण महत्व भी और मूल्य भी प्राप्त हुए हैं। तुलनात्मक अनुसंधान अन्य शोध पद्धतियों से विशिष्ट है। अन्य शोध में जहाँ एक ही प्रमुख आयाम रहता है वहाँ तुलनात्मक अनुसंधान में दो या दो से अधिक आयाम रहते हैं तुलनात्मक सामग्री भी दो या अधिक साहित्य से इकट्ठा की

जाती हैं। तुलनात्मक अध्ययन से विशेष लाभ यह होता है कि इसमें अनुसंधान की दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होकर अधिक गहराई में स्थित काव्य की अंतरात्मा का स्पर्श कर लेती है। परिणाम स्वरूप बहुत अमूल्य निष्कर्ष की प्राप्ति होती है। ज्ञान की परिपुष्टि एवं संपुष्टि के लिए तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। तुलनात्मक अध्ययन से वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होता है। इससे हमें उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति भी होती है।

भारतीय विचारधारा प्राय: एक समान है। भाषाओं का निवास पहने वह एक ही भाव अनेक रूपों में प्रत्यक्ष होता है। परन्तु परस्पर अपरिचय के कारण यह तत्व प्राय: अज्ञात ही रह गया है। इस एकता को उजागर कर भारत की भावनात्मक एकता को सुदृढ़ बनाने की दिशा में तुलनात्मक अध्ययन का मूल्य और महत्व दोनों पता चलता है। आज पाश्चात्य सभ्यता बाजारवाद, स्वार्थपरता एवं भोगवादिता की प्रवृत्ति भारत में अधिक प्रवृत्त होती जा रही है। जिससे व्यक्तिवाद बढ़ा, संयुक्त परिवार टूटे, तथा आदर भाव भी कम हुआ है। मानव मूल्य, नैतिक मूल्य पर्याप्त गति से संक्रमित तथा परिवर्तित हुए हैं। तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अनेक समानतापरक तथ्यों एवं सत्यों की स्थापना करके भारतीय संस्कृति की मूलभूत एकता 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को फिर चरितार्थ किया जा सकता है।

३.७ उद्देश्य

विश्व के तमाम देशवासियों के बीच जाति, वर्ण और धर्म आदि के वैमनस्य होते हुए भी उनके मस्तिष्क, तथा मानव हृदय में प्राय: समानता का भाव दिखाई देता है। विश्व के प्रतिष्ठित कवियों एवं साहित्यकरो ने अपनी देश, कालजयी रचनाओं में इसी मानव मनोभूमि की एकरूपता का प्रतिपादन किया है। यहाँ स्पष्ट है कि विभिन्न प्रान्तों एवं देशों के साहित्यों में विविध रूपों में व्यक्त मानव चेतना की अखंडता, विराटता एवं सह जिजीविषा को तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। और यही इसका प्रमुख उद्देश्य भी माना जाता है। हिन्दी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं एवं साहित्यों में तुलनात्मक अनुसंधान के उद्देश्य से भी आदान - प्रदान की भावना बढ़ेगी। दोनों भाषाएँ आपसी आदान-प्रदान से सम्पन्न एवं समृद्ध बनेगी। हिन्दी को राजभाषा के साथ-साथ संपर्क भाषा एवं विश्व भाषा के विराट तथा महान उत्तरदायित्व को निभाना है। इसके लिए हिन्दी को अपने प्रादेशिक स्वरूप से राष्ट्रीय स्वरूप में विकसित होना पड़ेगा और यह उद्देश्य भी तुलनात्मक अध्ययन से ही संभव हो सकता है।

प्रत्येक भाषा तथा साहित्य की अपनी भाषिक प्रकृति होती है। तुलनात्मक अध्ययन करते समय उसके शब्द, वाक्य, पद-व्यंजना, अलंकार तथा प्रादेशिक छबियों आदि का उद्घाटन होता है। दोनों भाषाओ के साम्य-वैषम्य से भाषा की प्रकृति का पता चलता है। एन.ई. विश्वनाथ अय्यर ने तुलनात्मक अध्ययन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि 'तुलनात्मक अध्ययन से विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का रसास्वादन तो होगा ही साथ ही हम गंभीरता से समीक्षा प्रधान अथवा काव्यशास्त्रीय अध्ययन करना चाहते हैं तो, हमें बड़ी मात्रा में सामग्री उपलब्ध हो सकेगी। चरित-चित्रण, प्रकृति वर्णन, परम्परा, कवि समय, विंबविधान, आख्यान शैली, छंद, कल्पना, मिथक, परिकल्पना, आदि कितने ही क्षेत्रों में हम नए-नए अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य अनुवाद को महत्व देना भी है, अनुवाद के ज्ञान के बिना तुलना संभव ही नहीं है। साहित्यों की तुलना से नए साहित्य सिद्धांत एवं तत्वों की खोज की जाती है। उसी तरह पुराने साहित्य सिद्धान्तों एवं तत्वों की योग्यता, अयोग्यता की जांच-पड़ताल की जा सकती है। आज तक हम साहित्य को किसी व्यक्ति द्वारा निर्मित मानते थे परन्तु तुलनात्मक अध्ययन उसे राष्ट्रीय-अन्तराष्ट्रीय परिप्रेक्षय में देखने का नजरिया देता है। दूसरों में खुद को जाँचने का माध्यम ही तुलनात्मक अध्ययन कहलाता है।

३.८ सारांश

तुलनात्मक साहित्य के निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि विभिन्न साहित्यिक अध्ययन में तुलना का प्रयोग मूलत: सादृश्य संबंध परम्परा विवेचन तथा प्रभाव सूत्रों के खोज के लिए किया जाता है। सारांशत: यह कहा जा सकता है कि,

१. तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा ऐसी विशेषताएँ उजागर होती है जो सामान्य अध्ययन से संभव नहीं है। तुलनात्मक अध्ययन के नवीन संदर्भ नवीन अर्थ में ही प्रकट होते है।

२. इसमें भाषा और साहित्य के बीच गहन संबंध स्थापित होता है।

३. इसके माध्यम से मशीन ट्रांसलेशन में भी सहायता मिलती है।

४. पारस्परिक आदान-प्रदान द्वारा भाषाओं और साहित्यों के क्षितिज इसमें विस्तृत होते है।

५. तुलनात्मक अध्ययन कहीं न कहीं पूर्वाग्रहों से मुक्ति दिलाता है।

६. एक ही देश की विविध इकाईयों में परस्पर निकट आने का प्रोत्साहन मिलता है।

इन सभी बिंदुओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि तुलनात्मक अध्ययन एक विशिष्ट प्रकार का अध्ययन है जो दो रचनाओं, दो रचनकारो या दो साहित्यों के बीच पारस्परिक संबंध स्थापित कर उनके नवीन संदर्भों एवं आयामों को उजागर करता है। आगे भी इस संबंध में कहा जा सकता है कि तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर भाषाओं के अलगाव को दूर किया जा सकता है और साथ ही एकता की मूल भावना को भी स्थापित किया जा सकता है। तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से विश्वबंधुत्व की भावना साकार हो जायेगी। संसार का अनुपम सौन्दर्य, अद्भुतता, सत्य तथा मर्यादाओ आदि का परिचय तुलनात्मक साहित्य से ही संभव हो सकता है। यह कहा जा सकता है कि तुलनात्मक साहित्य और तुलना के दृष्टिकोण से किए गए अध्ययन के एक विशेष उपागम है जो विभिन्न भाषाओं के साहित्यों की एकरस चेतना का संधान करता है तथा उनकी समस्याओं का अध्ययन करते हुए ज्ञान के अन्य विभिन्न क्षेत्रों के साथ अंत: संबंधों को दर्शाने का काम करता है। इस रूप में वह सार्वभौम दृष्टिकोण अपनाते हुए विश्वसाहित्य के रूप में दृष्टिगोचर होता है तथा अपने सर्व प्रमुख उद्देश्य अनेकता में एकता की घोषणा करता है।

३.९ दीर्घोतरी प्रश्न

१. तुलनात्मक अध्ययन की प्रस्तावना एवं उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

२. तुलनात्मक अध्ययन के स्वरूप को विस्तारपूर्वक समझाइए।

३. तुलनात्मक अध्ययन का महत्व निरूपित कीजिए।

४. तुलनात्मक अध्ययन के दौरान आने वाली समस्याओं का उल्लेख कीजिए।

५. तुलनात्मक अध्ययन में सामाजिक राजनीतिक बोध को सविस्तार समझाइए।

३.१० लघूत्तरीय प्रश्न

१. तुलनात्मक अध्ययन के महत्व पर टिप्पणी लिखिए

२. तुलनात्मक अध्ययन की सिद्धांत पर टिप्पणी लिखिए।

३. तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता को संक्षेप में लिखिए।

४. तुलनात्मक अध्ययन को सारांशत: स्पष्ट कीजिए।

५. तुलनात्मक अध्ययन के प्रतिमान पर टिप्पणी लिखिए।

३.११ बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न १. “तुलनात्मक साहित्य एक देश विशेष की सीमाओं से परे साहित्य का अध्ययन है” तुलनात्मक साहित्य की यह परिभाषा किसकी है?

उत्तर: एच. एच. रेमाकी

प्रश्न २. अनुरूप अध्ययन की पद्धति की वकालत किसके द्वारा की गई थी?

उत्तर: तुलनात्मक साहित्य के अमेरिकी स्कूल

प्रश्न ३. एक ‘काउंटर डिजाईन’ किसके द्वारा लोकप्रिय है?

उत्तर: बर्तोल्त ब्रेख्तो

प्रश्न ४. किसका विचार है कि सामान्य वर्गीकरण समय की बर्बादी है?

उत्तर: बेनेडेटो क्रोचे

प्रश्न ५. विश्व साहित्य किसके द्वारा लिखा गया है?

उत्तर: डेविड डमरोस्चो

३.१२ संदर्भ ग्रंथ

१. आय.एन. चंद्रशेखर रेड्डी - तुलनात्मक अध्ययन: निकष एवं निरूपण

२. पंडित चतुर्वेदी - समीक्षा शास्त्र

३. डॉ अनंत केदारे - तुलनात्मक अध्ययन व्यवहारिक कार्य विधि

४. अर्जुन तड़वी - अनुसंधान: सर्जन एवं प्रक्रिया

*****

४

तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि एवं प्रभाव

इकाई की रूपरेखा

४.० इकाई का उद्देश्य
४.१ प्रस्तावना
४.२ तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि
४.२.१ तुलनात्मक आलोचना
४.२.१.१ सादृश्य संबंधात्मक प्रविधि
४.२.१.२ प्रभाव प्रविधि
४.२.१.३ अध्ययन की स्वीकृति तथा संचारण प्रविधि
४.२.१.४ तुलनात्मक की सौभाग्य प्रविधि
४.२.१.५ संबंधात्मक द्वन्द्वात्मक प्रविधि
४.२.१.६ तुलनात्मक आलोचना की प्रविधि
४.३ तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि : भारतीय साहित्य के संदर्भ में
४.३.१ असाहित्यिक
४.३.२ गैर साहित्यिक
४.३.३ साहित्यिक
४.४ तुलनात्मक अध्ययन की दिशाएँ
४.५ तुलनात्मक साहित्य की कथ्यमिमांसा
४.६ तुलनात्मक साहित्य में रूप एवं शिल्प मिमांसा
४.७ तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन का प्रभाव क्षेत्र
४.८ सारांश
४.९ दीर्घोत्तरी प्रश्न
४.१० लघुत्तरीय प्रश्न
४.११ वस्तुनिष्ठ प्रश्न
४.१२ संदर्भ ग्रंथ

४.० इकाई का उद्देश्य

- इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि एवं प्रभाव को जान सकेंगे।

- तुलनात्मक प्रविधि के अध्ययन में तुलनात्मक आलोचना का अध्ययन करते हुए तुलनात्मक साहित्यिक की प्रमुख प्रविधियों को जान सकेंगे।
- तुलनात्मक साहित्य की प्रमुख दिशाओं का अध्ययन करेंगे।
- तुलनात्मक साहित्य की कथ्य मिमांसा का अध्ययन करेंगे।
- तुलनात्मक अध्ययन का प्रमुख प्रभाव क्षेत्र को जानेंगे।

४.१ प्रस्तावना

तुलनात्मक साहित्य:

तुलना करना एक सहज मानवीय प्रवृत्ति है किन्हीं दो व्यक्तियों, स्थानों अथवा वस्तुओं के सामने वैषम्य को जानने का मुख्य मार्ग तुलनात्मक अध्ययन है। ऐसा करते समय वह कभी स्थूल भाव को तो कभी सूक्ष्म भावों को अपना आधार बनाता है, उसी आधार पर वह किसी विषय वस्तु के प्रति अपनी धारणा बनाता है। यही कारण है कि एक ही विषय वस्तु मंतव्य विचार कार्य क्रियाकलाप निर्णय किसी एक व्यक्ति की दृष्टि में सही हो सकता है, तो दूसरे के दृष्टि में वही गलत सिद्ध हो सकता है किसी भी विषय वस्तु की गुणवत्ता तय करने के लिए उसे श्रेष्ठ या कनिष्ठ सिद्ध करने के लिए कुछ आधारभूत बातें तय करनी होती है उसकी कसौटियां बनानी होती हैं। योग्यता के लिए कई सारे मानदंडों का निर्धारण करना होता है तब कहीं जाकर हम किसी विषय वस्तु को जांच परख कर श्रेष्ठ या कनिष्ठ साबित करते हैं परंतु ऐसा करने के लिए तुलनात्मक विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है बिना तुलना किए यह कार्य असंभव सा प्रतीत होता है क्योंकि तुलना करते समय ऐसे अनगिनत पहलू हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं, जो अपने असंख्य रूप, रंग और गुणों से युक्त होकर उनसे संबंधित होते हैं जब किसी भी व्यक्ति या विषय वस्तु की तुलना किसी दूसरे व्यक्ति या विषय वस्तु के साथ की जाती है तो दो तरह की बातें उभर कर सामने आती हैं पहली बात नकारात्मकता से जुड़ी हुई होती हैं, जिसमें व्यक्ति दुखी होता है तो वहीं दूसरी बात सकारात्मकता से जुड़ी हुई है, जिसमें तुलना करने में मानव सभ्यता का विकास होता है। जब हम किसी भी दो राजाओं, दो शासकों को एक समान ही महान समझते हैं तो इसके लिए हम दोनों शासकों के शासनकाल, उनके द्वारा प्रजा हित में किए गए उनके कार्य, उनकी कृषि व्यापार राजनीतिक, कूटनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सभी नीति नियमों की तुलना करते हैं। उनकी समूची प्रशासनिक व्यवस्था को तुलनात्मक दृष्टिकोण से समझने और विचलित करने की कोशिश करते हैं। यह तो बात रही दो शासकों की इसी प्रकार हम दो व्यक्तियों दो राज्यों दो देशों दो साहित्य या अलग-अलग भाषाओं में लिखे गए साहित्य की तुलना करते हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जब १९०७ ई. में 'विश्व साहित्य' शब्द का प्रयोग किया था, तब से तुलनात्मक अध्ययन को भारत में विशेष बल मिला। भारतीय साहित्य के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन एवं साहित्य की नई परिकल्पनाएँ सामने आई। इसी उद्देश्य से सन् १९५४ ई. में साहित्य अकादमी की स्थापना हुई। भारतीय साहित्य की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने लिखा था कि "भारतीय साहित्य एक है यद्यपि वह बहुत-सी भाषाओं में लिखा जाता है।" भारतीय साहित्य चूँकि विभिन्न भाषा परिवारों में, भारोपीय, चीनी-तिब्बती, कश्मीरी, द्राविड़ इत्यादि - बांटा हुआ है, इसलिए भी इसे व्यापक

प्रचार-प्रसार प्राप्त नहीं हो सका। किन्तु भारत की मूलभूत संस्कृति को दिखाने के लिए भारतीय साहित्य की अवधारणा का व्यापक प्रचार-प्रसार आवश्यक है।

ज्ञान के अन्य अनुशासनों के समान तुलनात्मक साहित्य की भी क्या कोई मुकम्मल परिभाषा दी जा सकती है? हर व्यक्ति, अध्येता अपनी दृष्टि को परिभाषा में जोड़ देता है, इसलिए हर परिभाषाएँ भिन्न-भिन्न स्वरूप को प्राप्त हो जाती है। यहाँ हम भारतीय और पाश्चात्य कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषाओं के संदर्भ में तुलनात्मक साहित्य को समझने का प्रयास करेंगे। क्लाइव स्कॉट के अनुसार "तुलनात्मक साहित्य में विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्यों अथवा उनके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसकी आधार तत्व है। इस परिभाषा के अनुसार साहित्यिक प्रतिमानों के आधार पर साहित्य की तुलना की जाती है। रेमाक तुलनात्मकता को वह सांश्लेषिक दृष्टि बताया है जिसके द्वारा भौगोलिक एवं जातीय स्तर पर साहित्य का अनुसंधानात्मक विश्लेषण संभव हो पाता है। इस परिभाषा में दो विभिन्न संस्कृतियों स्तर पर एक संस्कृति दूसरे से किस प्रकार भिन्न है और उसके कारण क्या हैं। इसी प्रकार एक परिभाषा प्रो. लेन कपूर की है। उनके अनुसार तुलनात्मक साहित्य, साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की पंक्ति अभिव्यक्ति है। यह परिभाषा भी अपर्याप्त व अधूरी है, क्योंकि इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि तुलना किस रूप में और किनके बीच? साहित्य की तुलना के मापदण्ड क्या होंगे? यह भी स्पष्ट नहीं है। हालाँकि एक परिभाषा में यह संभव भी नहीं है। सैद्धान्तिक रूप से तुलनात्मक साहित्य के कुछ मापदण्ड है जैसे एक ही भाषा में लिखित दो कवियों लेखकों की तुलना, एक ही संस्कृति की दो भाषाओं के साहित्य की तुलना या दो संस्कृतियों की दो भाषाओं या साहित्य की तुलना इसमें दूसरी व तीसरी स्थिति ही तुलनात्मक साहित्य के लिए उपयोगी है। डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी ने अपनी पुस्तक 'तुलनात्मक साहित्य' भारतीय परिप्रेक्ष' में उलरिच वाइनस्टाइन की पुस्तक का संदर्भ किया है, जिसमें तुलनात्मक साहित्य की परिभाषाओं को दो वर्गों में बाँटा गया है।

(क) वर्ग में पॉल वा टिगलैम, ज्याँ मारि कारे तथा मारिओस फ्रांस्वास गुईयार्द जैसे विद्वान है। इस वर्ग की परिभाषाओं के अनुसार तुलनात्मक साहित्य को सौन्दर्यमूलक प्रतिमानों के आधार पर नहीं बल्कि ऐतिहासिक अनुशासन के रूप में देखने का प्रयास किया गया है।

(ख) वर्ग में रेने वेलेक, रेमाक, ऑस्टिन वारेन तथा प्रावर जैसे विद्वान हैं। जिन्होंने तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन को ऐतिहासिक अनुशासनों से इतर काव्यशास्त्रीय या सौन्दर्यशास्त्रीय प्रतिमानों के आधार पर देखने की पहल की है।

४.२ तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि

तुलनात्मक अध्ययन के संदर्भ में भारी भ्रम यह है कि इसकी कोई पद्धति नहीं है। किसी भाषा दूसरी भाषा की कृतियों की तुलना कर देने मात्र से ही तुलनात्मक साहित्य का कार्य पूरा हो जाता है। लेकिन क्या वाकई ऐसा है? जिस प्रकार लेविस ने आलोचना के लिए प्रविधि भरी (सिस्टेमिक) सुविचारित श्रृंखला व क्रम अनिवार्य बताया था। क्योंकि प्रविधि के अभाव में साहित्य अराजकता का केन्द्र बन जाता है, क्योंकि प्रविधि जहाँ एक ओर विचार व

रचना को अनुशासित करती है, वहीं दूसरी और उसे दिशा भी देती है। क्या पद्धति व साहित्य का इतना अनिवार्य सम्बन्ध होता है? साहित्य लिखने के पश्चात् हम उसे विशेष क्रम में व्यवस्थित कर देते हैं, ऐसा आमतौर पर समझा जाता है, लेकिन साहित्य लेखन से पूर्व क्या लेखक के मस्तिष्क में विचार क्रम सुव्यवस्थित नहीं होते? निश्चित तौर पर व्यवस्था पहले आती है और लेखन बाद में होता है। यह तो हुई लेखन की प्रक्रिया से ज्यादा व्यवस्था की माँग करती है। रेने वेलेक जैसे अध्येता यह कहते हैं कि तुलनात्मक साहित्य की कोई निश्चित कार्यपद्धति नहीं है। उनका तर्क है कि साहित्य के अन्दर तुलनात्मक तत्व सक्रिय रहता ही है, उसकी अलग प्रविधि का प्रश्न उचित नहीं है। क्रमशः तुलनात्मक साहित्य की तीन दृष्टि या परिप्रेक्ष्य माने गये हैं-

१. फ्रांसीसी - जर्मन स्कूल का अंतर्राष्ट्रीयता के आश्रय से साहित्य का कालक्रमिक अध्ययन साहित्यिक विकासवाद, ऐतिहासिक सापेक्षतावाद तथा ऐतिहासिक परिस्थिति।

२. अमरीकी स्कूल की रूपवादी दृष्टि काव्यशास्त्रीय सौन्दर्यात्मक कलापरक तथा विश्लेषणात्मक अंतदृष्टि

३. समाजशास्त्रीय - संस्कृतिपरक यथार्थवादी दृष्टि

४.२.१ तुलनात्मक आलोचना:

तुलनात्मक आलोचक के लिए तुलना एक सचेत और मूलभूत पद्धति है। तुलनात्मक पद्धति के आश्रय से एक से अधिक साहित्यों की तुलना करना तुलनात्मक अध्ययन है। इस प्रक्रिया में दो साहित्यों के सादृश्य संबंध, परम्परा तथा उनके प्रभावों के सूत्रों की खोज की जाती है। तुलनात्मक साहित्य की कुछ प्रमुख प्रविधियां निम्न हैं:

४.२.१.१ सादृश्य संबंधात्मक प्रविधि:

यह प्रविधि अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ के अंतर्गत आती है। अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ के आश्रय से दो कृतियों का साहित्यगत शैली, संरचना, मूड या विचार का सादृश्य संबंधात्मक अध्ययन होता है। इस प्रकार का अध्ययन सादृश्य या वैशम्यमूलक दोनों हो सकता है। किसी भी दो बेमेल विषयवस्तु की सादृश्यमूलक अध्ययन पद्धति को पॉलीजेनेटिक पद्धति कहते हैं। सादृश्यमूलक पद्धति की सहायता से आलोचक विभिन्न समाज तथा परिस्थिति में अभिव्यक्त होने वाले साहित्य का विवेचन करता है और भिन्न-भिन्न प्रश्नों की तलाश करता है। विभिन्न अभिव्यक्तियों की समानता का कारण क्या है? तथा वे कैसे एक-दूसरे से भिन्न हैं, इसका उत्तर तुलनात्मक आलोचना के सादृश्य-संबंधात्मक प्रविधि में खोजा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय संदर्भवाद के अंतर्गत परम्परा अध्ययन प्रविधि में भी दो कृतियों का सादृश्यमूलक अध्ययन होता है। इस प्रविधि की मान्यता के मूल में यह तथ्य है कि रचना, एक बड़े वर्ग का अंश होती है। और जो समान ऐतिहासिक, कालानुक्रमिक तथा रूपात्मक बंधनों से अनुस्युत होती है। इस प्रविधि में खास तौर से भाषा तथा साहित्य में प्रतिफलित राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन किया जाता है, या उनके संदर्भ को भी अनिवार्य रूप से शामिल कर लिया जाता है। इस प्रविधि के अध्ययन के संदर्भ में भी दो प्रस्ताव हैं। एक, प्रस्ताव यह है कि अध्ययन प्रविधि में पूरी प्रस्ताव है। एक प्रस्ताव यह है कि अध्ययन प्रविधि में पूरी

परम्परा के संदर्भ में अध्ययन किया जाये, जबकि प्रावर जैसे अध्येता इसके विपरीत यह प्रस्ताव रखते हैं कि अध्ययन के क्षेत्र को सीमित करके किसी एक ऐतिहासिक काल अथवा ऐतिहासिक दृष्टि से उभरते हुए किसी एक काव्यरूप का दो साहित्यों के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है । परम्परा अध्ययन की प्रणाली में राष्ट्रीयता एवं अंतर्राष्ट्रीयता एंव अंतर्राष्ट्रीय परम्पराएँ निकट आ जाती है।

४.२.१.२ प्रभाव प्रविधि:

रूथवेन में प्रभाव प्रविधि के दो धरातल बताये हैं एक जब शक्तिशाली व्यक्तित्व का प्रभाव, अध्येता को अपनी धारा में बहा ले जाता है और दूसरा धरातल यह होता है जब उस शक्तिशाली व्यक्तित्व के प्रभाव से अध्येता अपनी दृष्टि को और परिष्कृत व सम्पन्न करता चलता है। साइमन जियून ने प्रभाव को 'अनुकरण' न मानकर 'प्रेरणा' मानने से प्रभाव-अध्ययन के विरोध में की गई आलोचना माना है। तुलनात्मक साहित्याध्ययन में प्रभाव-सूत्रों का अध्ययन ही उसकी केन्द्रीय पद्धति है। क्लांद गुइए ने इसीलिए प्रभाव सूत्रों के अध्ययन को मनोवैज्ञानिक प्रतिभास कहा है। इसे स्पष्ट करते हुए गुइएँ प्रत्यक्ष और अप्रत्य प्रभाव की बात करता है। प्रत्यक्ष प्रभाव में आलोच्य लेखक और अप्रत्यक्ष प्रभाव में सृजनात्मक परम्परा को शामिल किया जा सकता है।

४.२.१.३ अध्ययन की स्वीकृति तथा संचारण प्रविधि:

उलरिच वाइस्टाइन ने इस प्रविधि को स्पष्ट करते हुए लिखा है- प्रभावसूत्रों का अध्ययन मूलतः परिपूर्ण दो साहित्यिक कृतियों को लेकर किया जाता है किन्तु स्वीकृति अध्ययन का क्षेत्र काफी बड़ा होता है। इसमें कृतियों के पारस्परिक संबंधों से लेकर उनके आस-पास की परिस्थितियों, लेखक, पाठक, समीक्षक, प्रकाशक तथा प्रतिवेशी परिवेश सब कुछ अध्ययन के विषय के अंतर्गत आता है। इस तरह स्वीकृति अध्ययन साहित्यिक समाजशास्त्र अथवा मनोविज्ञान की दिशा में विशेष रूप से अग्रसर होता है। उदाहरणस्वरूप हम समझ सकते हैं कि द्विवेदी कालीन नैतिकता केवल रीतिकाल के प्रति प्रतिक्रिया नहीं थी। बल्कि सम्पूर्ण विक्टोरियन युग के साहित्य की स्वीकृति भी थी। प्रावर ने इसे 'संचारण अध्ययन' कहा है। प्रावर ने इसकी परिभाषा देते हुए लिखा है- "संचारण संस्थाओं एवं रूपों के सदृश है जिसके माध्यम से विचार,सूचना तथा अभिवृत्तियां स्थानांतरित अथवा स्वीकृत होती है।"

४.२.१.४ तुलनात्मक की सौभाग्य प्रविधि:

अध्ययन की सौभाग्य प्रविधि क्या है? इसे समझाते हुए इन्द्रनाथ चौधरी ने लिखा है। स्वीकृति अध्ययन के अंतर्गत संचारण विश्लेषण के अतिरिक्त किसी एक लेखक या कृति का 'सौभाग्य' विश्लेषण भी किया जाता है। किसी एक विदेशी लेखक या कृति की दूसरे देश में किन्ही कारणों से, नोबेल पुरस्कार मिलने से या आकस्मिक मृत्यु होने से या किसी सत्ता का विरोध करने से ख्याति के बढ़ जाने पर वह कैसे दूसरे लेखकों या साहित्यिक परिवेश को प्रभावित करता है इसका अध्ययन ही सौभाग्य अध्ययन है।" वाल्टर मुथा ने 'स्टडीज इन द ट्रेजिक हिस्ट्री ऑफ लिटरेचर' में जर्मन साहित्य को प्रभावित करने की प्रक्रिया में 'हेमलेट' का अध्ययन किया है। वाँ टिगहैम, आंद्र मोरिजे तथा गुस्तव रूद्रलर ने स्वीकृति अध्ययन का विवेचन किया है।

४.२.१.५ संबंधात्मक द्वन्द्वात्मक प्रविधि:

डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी ने संबंधात्मक द्वन्द्वात्मक प्रविधि को स्पष्ट करते हुए लिखा है- "अंतर्राष्ट्रीय संदर्भवाद साहित्य को मानवीय ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों के साथ भी जोड़ते है जैसे दर्शन, इतिहास, मनोविज्ञान, राजनीतिशास्त्र, धर्म, समाजशास्त्र तथा ललित कलाएँ।"

४.२.१.६ तुलनात्मक आलोचना की प्रविधि:

तुलनात्मक प्रविधि में आलोचक सुव्यवस्थित ढंग से तुलनात्मक आलोचना के अंग रूप में तुलना 'के तकनीकों का प्रसार करता है और व्यक्तिगत लेखकों के द्वारा किए गए प्रयासों का अध्ययन आलोचना के मूल अंग दें। इस प्रविधि में कालक्रमिक अध्ययन नहीं, समकालिक अध्ययन होता है।

४.३ तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि: भारतीय साहित्य के संदर्भ में

तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि से इतर तुलनात्मक अध्ययन की प्रक्रिया एवं भारतीय साहित्य को ध्यान में रखते हुए विद्वानों तुलनात्मक प्रविधि को कुछ अलग ढंग से अलग मानकों को आधार बनाते हुए पुर्नपरिभाषित करने का प्रयास किया है। उल्लेखनीय है कि तुलनात्मक अध्ययन की प्रक्रिया का प्रथम चरण रचना विषयक चयन / आलोच्य विषय (या कृति) है। किसी कृति को तुलनात्मक स्वरूप के चयन में भी आलोचक की दृष्टि ही काम करती है। आलोच्य कृति क्यों महत्त्वपूर्ण है? इसे लेखक को स्पष्ट करना ही पड़ता है। और उससे भी महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि लेखक ने उसका चयन क्यों किया है? किसी भी कृति का चयन लेखक की प्रतिभा पर प्रश्न चिह्न लगा देता है। लेखक को सर्वप्रथम चयनित रचना के महत्व और उसके चुने जाने के कारणों का औचित्य सिद्ध करना पड़ता है। फिर इस प्रक्रिया में एक नहीं दो रचनाएँ होती है। प्रथम रचना का दूसरी रचना से सम्बन्ध किस प्रकार स्थापित हो रहा है या नहीं हो पा रहा है? यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। विषय चयन के नियम के अंतर्गत यह तथ्य भी है कि ध्यान रखने योग्य है कि गद्य और पद्य की रचनाओं का तुलना करना उचित नहीं है, क्योंकि दोनों विधाओं की रचना प्रक्रिया में बहुत अन्तर है, दोनों दो अनुशासन हैं। तुलनात्मक अध्ययन प्रक्रिया का दूसरा चरण होता है आलोच्य कृति के पूर्ण पाठ के समय में लेखक केंद्र में हुआ करता था, आज उसका स्थान पाठक ने ग्रहण कर लिया है। पूर्व की अपेक्षा आज पाठ लेखक से स्वतंत्र हो चुका है..... इसलिए पाठ की अनन्त संभावनाएँ होती है। किसी कृति का पाठ कैसे किया जाये, यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण है पाठक भी कई प्रकार के होते हैं। तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप और समस्याएँ (संपादक भ.ह. राजूरकर एवं राजमल बोरा) में पाठकों का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है-

४.३.१ असाहित्यिक:

असाहित्यिक पाठक वे होते हैं जो रचना का पाठ करते समय साहित्यिक मर्म की चिन्ता नहीं करते। ऐसे पाठक रचना में छिपे घटना क्रम में ही ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं।

४.३.२ गैर-साहित्यिक:

गैर- साहित्यिक पाठक से तात्पर्य ऐसे पाठक से है, जो रचना / पाठ में अपनी रुचि के अनुसार तथ्यों की खोज करता हैं । ऐसे पाठकों में भी उच्च साहित्यिक बोध का अभाव होता है।

४.३.३ साहित्यिक:

साहित्यिक पाठक का तात्पर्य ऐसे पाठकों से है जो पूरी रचना के आधार पर सम्पूर्णता में किसी पाठ का मूल्य निर्धारित करते हैं। ऐसे पाठकों का ध्यान पाठ के हर अंश पर होता है।

तुलनात्मक आलोचना प्रविधि का सबसे प्रमुख चरण तथ्य चयन होता है । किसी रचना में ढेरों तथ्य होते हैं, जो रचना को व्यवस्थित रूप प्रदान करने में अपनी भूमिका निभाते हैं। इस प्रक्रिया में एक खास एप्रोच / दृष्टि से आलोचक उस रचना को देखता है । वह एप्रोच विचारधारा का भी हो सकता है और किसी खास तथ्य का चुनाव व उसका विस्तार भी तथ्य चयन का भी वस्तुतिष्ठ आधार होता है, लेकिन प्रायः लेखक आत्मनिष्ठ ढंग से ही विश्लेषण करते हैं। साहित्य की आलोचना प्रक्रिया में अक्सर ही लेखकों की तुलना के संदर्भ में आलोचक एकनिष्ठ दृष्टि के शिकार हो ही जाते हैं। कबीर -तुलसी, तुलसी-सूर, तुलसी - जायसी कालिदास भवभूति, वाल्मीकि-व्यास, प्रसाद-निराला, पंत-निराला, मीरा-महादेवी, अज्ञेय-मुक्तिबोध, वडर्सवर्थ- कॉलरिज जैसे ढेरों उदाहरण है, जब दो रचनाकरों की तुलना के बहाने एक को श्रेष्ठ सिद्ध करना ही आलोचक का उद्देश्य रहा है।

तुलनात्मक आलोचना प्रविधि का चतुर्थ चरण तथ्यों के विश्लेषण से जुड़ा हुआ है। तथ्य का स्वरूप कैसा है? तथ्य के घटक-इतिहास और दर्शन की दृष्टि से विश्लेषण किया जाता है। इतिहास और दर्शन में रचना के सारे संदर्भ को समेट लिया जाता है। इतिहास ने अतर्गत सारे तथ्य (चाहे वह राजनीति, चाहे व समाजशास्त्र या पत्रकारिता या अन्य किसी विधा हो) आ जाते हैं व दर्शन के अंतर्गत सारे विचार व वाद (मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषण, उत्तर- आधुनिकता, आधुनिकता, संरचनावाद या प्राचीन दर्शन सभी आ जाते हैं) तुलनात्मक आलोचना प्रविधि का पंचम चरण / प्रक्रिया है- विषय वस्तु एवं शिल्प के स्तर पर आलोच्य रचनाओं की संगति की विचारणा एवं उनका मूल्यांकन करना। विषयवस्तु का सम्बन्ध उस देशकाल - परिस्थिति से अनिवार्य सूक्ष्म रूप से जुड़ा हुआ होता है । साहित्यिक रचना जितना कहती है, उतना ही अनकहा रह जाता है... .। इस दृष्टि से रचना के रूप के माध्यम से भी आलोचक युग समाज के परिवर्तन को पकड़ने का प्रयास करता है। भारतीय काव्यशास्त्र की सैद्धान्तिक व शिल्पगत बारीकियों को लेकर ही लम्बी चर्चा देखने को मिलती है।

४.४ तुलनात्मक अध्ययन की दिशाएं

तुलनात्मक साहित्य, एकल साहित्य (single literature) अध्ययन से भिन्न है । एकल साहित्य का अध्ययन जहाँ साहित्य के सीमित अध्ययन की दिशा की ओर संकेत करता है, वहीं तुलनात्मक साहित्य हमें साहित्य के व्यापक अध्ययन की दिशा में ले जाता है। यहाँ तुलना इस बात की नहीं होती कि कौन-सा साहित्यकार श्रेष्ठ है बल्कि तुलना इस बात की

होती है कि दोनों साहित्यकारों में समानता और भिन्नता के बिन्दु कौन-से हैं। कहाँ भाव-संवेदनाएं-विचार-कला एक दूसरे के साथ मिलते हैं कहाँ अलग हैं। यह दूसरे को पहचानने तथा स्वीकार करने की दिशा में पाठक को ले जाता है। वर्तमान समय में इसकी विशेष आवश्यकता है। तुलनात्मक साहित्य के विषय में एक स्वतंत्र अध्ययन को मान्यता देना आज भी विवादग्रस्त विषय है। तुलनात्मक साहित्य का भी एक दृष्टिकोण है, एक प्रविधि है और एक तकनीकी है। तुलनात्मक साहित्य की प्रवृत्तियाँ अभी भी पूरी तरह से स्थिर नहीं हो पायी हैं। इसके अध्ययन का आरम्भ हम इतिहास बोध से करते हैं, किन्तु उसकी परिसमाप्ति एक प्रकार के सार्वभौम साहित्येतिहास में होती हैं।

तुलना करना एक सहज मानवीय प्रवृत्ति है किन्हीं दो व्यक्तियों, स्थानों अथवा वस्तुओं के सामने वैषम्य को जानने का मुख्य मार्ग तुलनात्मक अध्ययन है। ऐसा करते समय वह कभी स्थूल भाव को तो कभी सूक्ष्म भावों को अपना आधार बनाता है, उसी आधार पर वह किसी विषय वस्तु के प्रति अपनी धारणा बनाता है। यही कारण है कि एक ही विषय वस्तु मंतव्य विचार कार्य क्रियाकलाप निर्णय किसी एक व्यक्ति की दृष्टि में सही हो सकता है, तो दूसरे के दृष्टि में वही गलत सिद्ध हो सकता है किसी भी विषय वस्तु की गुणवत्ता तय करने के लिए उसे श्रेष्ठ या कनिष्ठ सिद्ध करने के लिए कुछ आधारभूत बातें तय करनी होती है उसकी कसौटियां बनानी होती हैं। योग्यता के लिए कई सारे मानदंडों का निर्धारण करना होता है तब कहीं जाकर हम किसी विषय वस्तु को जांच परख कर श्रेष्ठ या कनिष्ठ साबित करते हैं परंतु ऐसा करने के लिए तुलनात्मक विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है बिना तुलना किए यह कार्य असंभव सा प्रतीत होता है क्योंकि तुलना करते समय ऐसे अनगिनत पहलू हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं, जो अपने असंख्य रूप रंग और गुणों से युक्त होकर उनसे संबंधित होते हैं जब किसी भी व्यक्ति या विषय वस्तु की तुलना किसी दूसरे व्यक्ति या विषय वस्तु के साथ की जाती है तो दो तरह की बातें उभर कर सामने आती हैं पहली बात नकारात्मकता से जुड़ी हुई होती हैं, जिसमें व्यक्ति दुखी होता है तो वहीं दूसरी बात सकारात्मकता से जुड़ी हुई है, जिसमें तुलना करने में मानव सभ्यता का विकास होता है। जब हम किसी भी दो राजाओं, दो शासकों को एक समान ही महान समझते हैं तो इसके लिए हम दोनों शासकों के शासनकाल, उनके द्वारा प्रजा हित में किए गए उनके कार्य उनकी कृषि व्यापार, राजनीतिक, कूटनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सभी नीति नियमों की तुलना करते हैं उनकी समूची प्रशासनिक व्यवस्था को तुलनात्मक दृष्टिकोण से समझने और विचलित करने की कोशिश करते हैं यह तो बात रही दो शासकों की इसी प्रकार हम दो व्यक्तियों दो राज्यों दो देशों दो साहित्य या अलग-अलग भाषाओं में लिखे गए साहित्य की तुलना करते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन का कार्य सत्य की खोज और नई अवधारणा की स्थापना का अनुष्ठान है। इसे परिभाषित करते हुए क्लाइव लिखते हैं तुलनात्मक साहित्य में विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्य अथवा उसके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आधार तत्व है। तुलनात्मक साहित्य (Comparative literature) वह विद्या-शाखा है जिसमें दो या अधिक भिन्न भाषायी, राष्ट्रीय या सांस्कृतिक समूहों के साहित्य का अध्ययन किया जाता है। तुलना इस अध्ययन का मुख्य अंग है। साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन व्यापक दृष्टि प्रदान करता है। संकीर्णता के विरोध में व्यापकता आज के विश्व-मनुष्य की आवश्यकता है। तुलनात्मक साहित्य पर विचार करते समय हमारे दिमाग में पहला प्रश्न यही आता है कि तुलनात्मक साहित्य होता क्या है। क्या कोई ऐसा साहित्य

होता है जो अपनी प्रकृति में ही तुलनात्मक होता है? या कुछ ऐसे लेखक होते हैं जो तुलनात्मक साहित्य लिखते हैं? इस दृष्टि से हमें पहली बात तो यह जान लेना चाहिए कि प्रत्येक लेखक साहित्य ही रचता है, तुलनात्मक साहित्य नहीं लिखता। अर्थात 'तुलनात्मक साहित्य' अपने आप में कुछ नहीं होता। जब हम 'तुलनात्मक साहित्य' पद का प्रयोग करते हैं, तब हमारा मतलब होता है, साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन। हमारे अध्ययन की पद्धति तुलनात्मक होती है। हम उसी का अध्ययन करते हैं। वैसे कुछ लोगों का यह भी मानना है कि साहित्य का प्रत्येक अध्ययन तुलनात्मक ही होता है तुलना के द्वारा ही हम किसी चीज को समझ सकते हैं। बिना तुलना किए हुए हम कभी नहीं समझ पाते कि सूरदास बड़े कवि हैं या तुलसीदास, प्रेमचंद और प्रसाद की तुलना करके ही हम दोनों लेखकों को समझ पाते हैं। जब कहा जाता था कि "सूर-सूर तुलसी ससि उड्गन केशवदास" तब तुलना ही तो होती थी। इसी तरह लोक कहावतों में कहा जाता है कहाँ "राजा भोज और कहाँ गंगू तेली" इसमें तुलना की गई है। परन्तु यह तुलनात्मक साहित्य के अन्तर्गत नहीं आता। भले ही तुलनात्मक साहित्य के विरोधी मानते रहे हों कि साहित्य का प्रत्येक अध्ययन तुलनात्मक साहित्य ही होता है। तुलना के बिना हम न तो कोई मानदण्ड स्थिर कर सकते हैं और न साहित्य को समझ ही सकते हैं।

हेनरी एच.एच. रेमाक ने तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा इस प्रकार दी है, तुलनात्मक साहित्य एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी सम्बन्धों का भी अध्ययन है। तुलनात्मक साहित्य एक विशेष प्रकार का अध्ययन है। इस अध्ययन का ब्यौरा देते हुए तुलनात्मक साहित्य की भूमिका में प्रो. इन्द्रनाथ चौधरी ने लिखा है-

तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के 'कम्पेरेटिव लिटरेचर' का हिंदी अनुवाद है। एक स्वंतंत्र विद्याशाखा के रूप में विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में इसके अध्ययन-अध्यापन के कार्य को आजकल विशेष महत्व दिया जा रहा है। अंग्रेजी के कवि मैथ्यू अर्नाल्ड ने सन् १८४८ में अपने एक पत्र में सबसे पहले 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' पद का प्रयोग किया था (मैथ्यू अर्नाल्ड के पत्र, १८९५ १ ८ सं. जी.डब्ल्यू.ई. रसल)। परन्तु प्रारम्भ में ही इसके शाब्दिक अर्थ को लेकर विवाद रहा क्योंकि साहित्य यदि कहानीकार कवि आदि की सृजनशील कलात्मक अभिव्यक्ति है तो वह किसी तरह भी तुलनात्मक नहीं हो सकता। हमने आज तक ऐसा कोई कवि नहीं देखा जो तुलानात्मक कविता, कहानी या उपन्यास लिखता हो। साहित्य की प्रत्येक कृति अपने आप में पूर्ण होती है और साहित्य सृष्टि में कहीं दूसरे साहित्य के साथ तुलना की जरूरत लाया जा सकता। नार्था फ्राई ने १९४० के दशक के उत्तरार्द्ध तथा १९५० के दशक में साहित्य की निरस्तक को मिथक की केन्द्रीयता में देखा। इसके पहले टी. एस. इलियट परम्परा के परिप्रेक्ष्य में कृति के (तुलनात्मक) अध्ययन की बात कर चुके थे। १९६३ में तुलनात्मक साहित्य को परिभाषित करते हुए रेनेवेलेक इसे विषय वस्तु एवं पद्धति के बीच यांत्रिक ढंग से भेदक रेखा खींचने वाली पद्धति मानने का विरोध करते है वे साहित्य और इतिहास संयोजन पर बल देते हैं। लेविन (levin) १९६९ में कहते हैं कि तुलनात्मक साहित्य बात करने के बजाय साहित्यों की तुलना करने की जरूरत हैं।

४.५ 'तुलनात्मक साहित्य' की कथ्य मीमांसा

'तुलनात्मक साहित्य' पदबंध 'सार्वभौम साहित्य', 'साहित्य', 'आम साहित्य', 'विश्व साहित्य' से प्रतिस्पर्धा करते हुए आया है। वेन तिघेम के अनुसार "तुलनात्मक साहित्य का लक्ष्य है विभिन्न साहित्यों का एक-दूसरे के संबंध के साथ अध्ययन करना।" कुछ विचारक तुलनात्मक साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय साहित्य संबंधों के इतिहास के संदर्भ में विश्लेषित करते हैं। इस क्रम में वे तथ्य, संपर्क और आध्यात्मिक संबंधों का अध्ययन करते हैं। इसी क्रम में हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि लेखक की जिंदगी और आकांक्षाएं अनेक साहित्यों से जुड़ी होती हैं। एक मुश्किल यह है कि 'तुलनात्मक साहित्य' और 'जनरल साहित्य' में विभाजक रेखा खींचना मुश्किल है।

तुलनात्मक साहित्य के नजरिए से देखें तो संस्कृत, उर्दू और हिन्दी में कुछ चीजें साझा हैं। इन तीनों भाषाओं के साहित्य पर दरबारी संस्कृति और सभ्यता का गहरा असर है। इनमें संस्कृत और उर्दू पर दरबारी संस्कृति का ज्यादा असर है। हिन्दी पर कम असर है। हिन्दी में वीरगाथाकाल और रीतिकाल पर दरबारी संस्कृति का व्यापक असर देखा जा सकता है। इसके अलावा हिन्दी की मध्यकालीन कविता जन-जीवन से जुड़ी कविता है। इसमें राम-कृष्ण के आख्यान की आंधी चली है। राम-कृष्ण के बहाने दरबारी संस्कृति का विकल्प निर्मित किया गया। राजा के सामने सिर झुकाने से बेहतर भगवान के सामने सिर झुकाने का भाव है, जो कि प्रतिवादी भाव है। इसके विपरीत संस्कृत काव्य परंपरा में राजा को अपदस्थ नहीं किया जा सका। संस्कृत काव्य का बड़ा हिस्सा राजा केन्द्रित आख्यानों से भरा है। इसमें जनता के भावों और सुख-दुख के लिए कोई जगह नहीं है। इसमें पशु हैं, पक्षी हैं, उपदेश हैं, काव्यमानक हैं और सबसे बड़ी बात यह कि इसमें सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिम्ब नहीं है।

हजारीप्रसाद द्विवेदी ने रेखांकित किया है कि संस्कृत कविता जीवन से कटी हुई है। जबकि हिन्दी कविता सामाजिक जीवन से जुड़ी है। संस्कृत कविता जन्म से नियमों से बंधी रही है। काव्य नियमों का यथोचित निर्वाह करना कवि का लक्ष्य रहा है। इसके विपरीत हिन्दी के जनकवियों ने कभी भी काव्य नियमों का पालन नहीं किया। काव्य निर्माण के उपकरणों को उन्होंने जन प्रचलित काव्य रूपों से ग्रहण किया। काव्य नियमों के प्रति हिन्दी के जनकवियों का उपेक्षाभाव वह प्रस्थान बिंदु है, जहां से हमें प्रतिवादी काव्य के आरंभ को देखना चाहिए। नियमों की उपेक्षा से पैदा हुआ प्रतिवादी काव्यरूप अपने साथ राजतंत्र का विकल्प भी लेकर आया। रामाश्रयी-कृष्णाश्रयी, सगुण- निर्गुण काव्य परंपरा से उसने अंतर्वस्तु ली। इन कवियों ने क्या लिखा और किस नजरिए से लिखा इसका उनकी मंशा से गहरा संबंध है।

मध्यकालीन जनकवियों ने राम-कृष्ण, सगुण-निर्गुण आदि व्यापक अभिव्यक्ति का क्षेत्र चुना। उसमें धारावाहिकता बनाए रखी। यह मूलतः उनके दरबारी संस्कृति के प्रति विरोधभाव की अभिव्यक्ति है। इस प्रतिवाद के केन्द्र में काव्य के रूप और अंतर्वस्तु दोनों हैं। कवि की मंशा लक्ष्यीभूत श्रोता की प्रकृति के साथ नाभिनालबद्ध होती है। संस्कृत के कवि का लक्ष्यीभूत श्रोता और हिन्दी के जनकवियों का लक्ष्यीभूत श्रोता भिन्न है। यह भिन्न ही नहीं बल्कि इनके हितों में गहरा अंतर्विरोध है। इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो संस्कृत-हिन्दी कवियों के काव्यजगत में गहरी विचारधारात्मक टकराहट नजर आएगी। संस्कृत-हिन्दी के कवियों के

सामाजिक सरोकारों में गहरा अंतर नजर आएगा। यही वजह है कि हिन्दी के मध्यकालीन जनकवि संस्कृत काव्य परंपरा से अपने को पूरी तरह अलग करते हैं।

संस्कृत कवि दरबार के लिए लिखता है। हिन्दी का जनकवि भक्त के लिए लिखता है, सबके लिए लिखता है। संस्कृत कवि अपनी निजता को सार्वजनिक नहीं करता इसके विपरीत हिन्दी कवि अपनी निजता को सार्वजनिक रूप से व्यक्त करता है। संस्कृत कवि अपने निजी जीवन के दुखों को छिपाता है, हिन्दी कवि उन्हें सार्वजनिक करता है। व्यक्तिगत को सामाजिक बनाता है और व्यक्तिगत और सार्वजनिक के सामंतीभेद को नष्ट करते हुए व्यक्तिगत को सार्वजनिक बनाता है। यहां से वह सचेत रूप से आधुनिक भावबोध के लक्षणों की नींव डालता है।

उल्लेखनीय है मध्यकालीन कवियों ने अपने सारे उपकरण व्यापारिक पूंजीवाद से लिए हैं। ये कवि नई उदीयमान सामाजिक शक्तियों कारीगर-दस्तकार और उदीयमान व्यापारीवर्ग के भावबोध से संसार को देखते हैं। उपेक्षित शूद्रों और स्त्रियों को समानता और अभिव्यक्ति का मंच देते हैं। उनके यहां सब कुछ पर्सनल है, व्यक्तिगत है। भक्ति का रूप भी व्यक्तिगत है। व्यक्तिगत सत्ता का ऐसा महाराग इसके पहले कभी नहीं सुना गया। व्यक्तिगत भावों की अभिव्यक्ति के बहाने राजतंत्र की समूची सत्ता और उसके सांस्कृतिक बोध और मूल्य संरचना को सर्जनात्मक चुनौती दी गयी।

तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र में अध्ययन की कई पद्धतियां प्रचलन में हैं। फ्रांसीसी तुलनाशास्त्री 'प्रभाव'के अध्ययन पर जोर देते हैं। रेने वैलेक ने 'कारण-प्रभाव' को महत्ता दी है। हंगरी के तुलनाशास्त्री 'स्रोत' और 'मौलिकता' को महत्वपूर्ण मानते हैं। इस प्रक्रिया में उन्होंने राष्ट्रीय चरित्रों की पहचान स्थापित की। उल्लेखनीय है कि 'प्रभाव' का 'ग्रहण' के साथ संबंध है। फलतः ग्रहणकर्ता मूल्यांकन के केन्द्र में रहेगा। वेन तेघम और अन्य विचारकों ने 'ग्रहण' के सिद्धांत के अनुरूप ही अपने तुलनात्मक नजरिए का विकास किया।

साहित्य संप्रेषण और ग्रहण के सवालों पर सामयिक तुलनाशास्त्री विभिन्न दृष्टियों से विचार करते रहे हैं। हंगरी के तुलनाशास्त्रियों ने 'स्रोत' और 'मौलिकता' पर जब जोर दिया था तो उस समय हंगरी में १९वीं शताब्दी का समय था और संस्थानों के निर्माण की प्रक्रिया चल रही थी। तुलनात्मक साहित्य के मूल्यांकन और सिद्धान्त की किताबों को गौर से देखें तो पाएंगे कि कुछ महत्वपूर्ण पदबंधों का प्रयोग मिलता है। जैसे, फार्चून, डिफ्यूजन, रेडिएशन आदि इन पदबंधों का पाठक पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में धडल्ले से प्रयोग चल रहा है। जबकि ग्रहणकर्त्ता के संदर्भ में प्रतिक्रिया, क्रिटिक, ओपिनियन, रीडिंग, ओरिएण्टेशन आदि का खूब प्रयोग हो रहा है। पुनर्रूत्पादन के संदर्भ में फेस, रिफ्लेक्शन, मिरर, इमेज, रिजोनेंस, इको, म्यूटेशन आदि का प्रयोग मिलता है।

फ्रांस में ग्रहण सिद्धांत का विरोध करने वालों का भी एक गुट है जो विषयवस्तु केन्द्रित अध्ययन पर जोर देता है। इस क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक और शैलीवैज्ञानिक आलोचना दृष्टियों का जमकर प्रयोग हुआ है। इसके दायरे में मिखाइल बाख्तिन के 'इंटरटेक्चुअलिटी' से लेकर वाक्य-विन्यास, रूपकों, वाक्य की बहुअर्थी संरचना और रूपवाद आदि सब कुछ शामिल हैं। फ्रांसीसी तुलनाशास्त्रियों ने इमेज और इमेनोलॉजी में अंतर किया है और इमेज के अध्ययन पर जोर दिया है। इन विचारकों ने विचारों के इतिहास, मनोदशा,

संवेदनशीलता और मूल्यों का भी अध्ययन किया है । ये लोग वैविध्य और उदारता के आधार पर मूल्यांकन करते हैं। फ्रांसीसी तुलनाशास्त्रियों ने रूपवादी दृष्टिकोण का विरोध करते हुए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। उनके द्वारा किए गए अध्ययनों को चार भागों में बांट सकते हैं।

१. काल्पनिकता का अध्ययन

२. किसी महान विषयवस्तु का अध्ययन

३. प्रतीकों का अध्ययन

४. विषयवस्तु का अध्ययन

फ्रांसीसी तुलनाशास्त्रियों के यहां सामान्य साहित्य और तुलनात्मक साहित्य का अंतर साफ दिखाई देता है। इन लोगों ने रिप्सेशन थ्योरी को सामान्य साहित्य के क्षेत्र के बाहर रखा है। इसके अलावा पद्धति की समस्याओं को भी उठाया है। तुलनात्मक साहित्य की जटिलता और समृद्धि को रेखांकित किया है। उनके मूल्यांकन के केन्द्र में पाठ है। किंतु यह काम उन्होंने रूपवादी और संरचनावादियों से भिन्न रूप में किया है । वे हमेशा इमेजरी और ओपिनियन पर केन्द्रित होकर काम करते रहे हैं। विधाओं के इतिहास का पुनर्लेखन, काव्य की व्याख्या के लिए इंटरटेक्चुअलिटी या अन्तर्पाठीयता की धारणा, इतिहास और अन्तर्वस्तु का प्रयोग करते रहे हैं। इस क्रम में उन्होंने पाठ का विकेन्द्रीकरण किया है।

४.६ तुलनात्मक साहित्य में रूप एवं शिल्प–मीमांसा

तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' का हिन्दी अनुवाद है । यह एक स्वतन्त्र विद्याशाखा के रूप में विकसित है तथा विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में इसके अध्ययन-अध्यापन के कार्य को आजकल विशेष महत्व दिया जा रहा है। अंग्रेजी के कवि 'मैथ्यू आर्नल्ड' ने सन् १८४८ में अपने एक पत्र में सबसे पहले 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' पद का प्रयोग किया था। भारत में सन् १९०७ में रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने विश्व साहित्य का उल्लेख करते हुए साहित्य के अध्ययन में तुलनात्मक दृष्टि की आवश्यकता पर जोर दिया था। मानव के सांस्कृतिक इतिहास की सहज धारा के आश्रय में ही 'रवि बाबू' ने तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन पर बल दिया था । तुलनात्मक साहित्य के विषय में एक स्वतंत्र अध्ययन को मान्यता देना आज भी विवादग्रस्त विषय है। तुलनात्मक साहित्य का भी एक दृष्टिकोण है, एक तकनीकी है । तुलनात्मक साहित्य की प्रवृत्तियाँ अभी भी पूरी तरह से स्थिर नहीं हो पायी हैं। इसके अध्ययन का आरम्भ हम इतिहास बोध से करते हैं, किन्तु उसकी परिसमाप्ति एक प्रकार के सार्वभौम साहित्येतिहास में होती हैं। तुलनात्मक पद्धति साहित्य और अकादमिक जगत की बहुप्रचलित पद्धति है। तुलनात्मक पद्धति के कारण साहित्य के अंतर्जगत और साहित्य जगत दोनों का विस्तार होता है। तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा पर लिखते हुए डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी ने लिखा है, तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' का हिन्दी अनुवाद है एक स्वतंत्र विद्याशाखा के रूप में विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में इसे अध्ययन- अध्यापन के कार्य को आजकल विशेष महत्त्व दिया जा रहा है। तुलनात्मक साहित्य का सर्वप्रथम प्रयोग मैथ्यम ऑर्नल्ड ने सन् १८४८ में

अपने एक पत्र में सबसे पहले किया था। वस्तुतः तुलनात्मक साहित्य में दो देश, दो भाषा या दो रचनाकारों की कृतियों को एक दूसरे के सापेक्ष रखकर देखा जाता है। तुलनात्मक पद्धति का मूल उद्देश्य सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में एक दूसरे को रखकर नई अर्थवत्ता की तलाश करना होता है। इस ढंग से तुलनात्मक पद्धति साधन है, साध्य नहीं हैनरी एच. एच. रेमार्क ने भी तुलनात्मक साहित्य की विशेषताओं के स्पष्ट किया है। उनके अनुसार साहित्य की विशेष तत्त्वों को स्पष्ट किया है। उनके अनुसार एकक राष्ट्रों की परिधि से परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है तथा यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का ज्ञान है। रेमार्क ने दो राष्ट्र के संदर्भ में तुलनात्मक साहित्य की उपयोगिता निर्धारित की है। व्यापक रूप से दो विधाओं की कृतियों के वर्गीकरण को भी इसमें समेट लिया जाता है।

४.७ तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन का प्रभाव क्षेत्र

आज इक्कीसवीं सदी में भूमंडलीकरण, बाजारवाद के कारण संपूर्ण विश्व एक 'विश्वग्राम' के रूप में बन गया है। ऐसे में तुलनात्मक साहित्य को अनेक कारणों से अनन्य साधारण महत्व प्राप्त हुआ है। तुलनात्मक साहित्य में दो या दो से अधिक आयाम रहते हैं। तुलनात्मक सामग्री भी दो या अधिक स्रोतों से इकट्ठा की जाती है। इस पद्धति के महत्व के बारे में डॉ. पी. आर डोडिया का मत है- "तुलनात्मक अध्ययन से विशेष लाभ यह होता है कि इसमें अनुसंधान की दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होकर अधिक गहराई में स्थित काव्य की अंतरात्मा का स्पर्श कर लेती है। परिणाम स्वरूप बहुत अमूल्य निष्कर्ष की प्राप्ति होती है। ज्ञान की परिपुष्टि एवं संपुष्टि के लिए तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।" तुलनात्मक अध्ययन से वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होता है। इससे हमें उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति होती है।

प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान मैक्समूलर ने इस संदर्भ में कहा है, "All higher Knowledge is gained by comparison and rests on comparisan." अर्थात- "सभी उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति तुलना से हुई है और वह तुलना पर ही आधारित है।"

तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अनेक समानतापरक तथ्यों एवं सत्यों की स्थापना करके भारतीय संस्कृति की मूलभूत एकता (वसुधैव कुटुंबकम्) की भावना को फिर चरितार्थ किया जा सकता है।

विश्व के विभिन्न देशवासियों के बीच जाति, वर्ण और धर्म आदि के वैमनस्य के होते हुए भी उनके मस्तिष्क, मानव-हृदय में प्राय: समानता पाई जाती है। विश्व के प्रतिष्ठित कवियों एवं साहित्यकारों ने अपनी देश-काल जयी कृतियों में इसी मानव मनोभूमि की एकरूपता का प्रतिपादन किया है। स्पष्ट है कि विभिन्न प्रांतों एवं देशों के साहित्यों में विविध रूपों में व्यक्त मानव-चेतना की अखंडता, विराटता एवं सह जिजीविषा को तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रत्येक भाषा एवं साहित्य की अपनी भाषिक प्रकृति होती है। तुलनात्मक अध्ययन करते समय उसके शब्द, वाक्य, पद, व्यंजना, अलंकार, प्रादेशिक छवियों आदि का उद्घाटन होता है। दोनों भाषाओं के साम्य-वैषम्य से भाषा की प्रकृति का पता चलता है। एन. ई. विश्वनाथ

अय्यर के अनुसार, "तुलनात्मक अध्ययन से विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का रसास्वादन तो होगा ही साथ ही हम गंभीरता से समीक्षा प्रधान अथवा काव्य-शास्त्रीय अध्ययन करना चाहते हैं तो हमें बड़ी मात्रा में सामग्री मिलेगी। चरित्र-चित्रण, प्रकृति वर्णन, परंपरा, कवि-समय, बिंब विधान, आख्यान शैली, छंद, कल्पना, मिथक, परिकल्पना आदि कितने ही क्षेत्रों में हम नए-नए अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।" तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद को महत्व देता है। अनुवाद के ज्ञान बिना तुलना संभव नहीं है। साहित्यों की तुलना से नए साहित्य सिद्धांत एवं तत्त्वों की खोज की जाती है। उसी तरह पुराने साहित्य सिद्धांतो एवं तत्त्वों की योग्यता-अयोग्यता की जाँच-पड़ताल की जा सकती है। आज तक हम साहित्य किसी व्यक्ति द्वारा निर्मित मानते थे परंतु तुलनात्मक अध्ययन उसे राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखने का नज़रिया दता है। दूसरों में खुद को जाँचने का माध्यम तुलनात्मक अध्ययन है। जिससे खुद की सच्ची पहचान बनती है। किसी कृति का अलगपन बिना तुलना किए समझता नहीं है।

उपरोक्त उदाहरणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि तुलनात्मक अध्ययन अनेक दृष्टियों से मानव-जाति के विकास का साधन है। ज्ञान-विज्ञान की नई दिशाओं का उद्घाटन, भाषा-शैली एवं अभिव्यंजना की मनोहारी अभिनव छटाओं का दिग्दर्शन, राष्ट्रीय एवं भावात्मक ऐक्य का प्रतिपादन, विश्व मानव का गौरव, बहुमुखी प्रकट रूप जाति, धर्म एवं रूढ़ियों द्वारा आरोपित भिन्नता में एकता दर्शन, त्याग प्रधान भारतीय संस्कृति का संस्थापन एवं अनके न्यूनताओं के प्रति सतर्कता, तुलनात्मक अध्ययन द्वारा संभव है।

आम तौर पर हम मानते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। यदि हम दर्पण की इस अवधारणा को पूरी तरह से स्वीकार न भी करें, तो भी इतना तो मानते ही हैं कि साहित्य का उस समाज और परिवेश से गहरा रिश्ता होता है, जिस समाज और परिवेश में उसकी रचना होती है। परिवेश का सम्बन्ध देश से होता है। देश में वहां का भूगोल और समाज संरचना होती है। फिर कोई भी देश स्थायी नहीं होता, वह परिवर्तित होता रहता है। यह परिवर्तन काल सापेक्ष है। काल के साथ देश में परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन का प्रभाव साहित्य में लक्षित किया जाता है किसी साहित्यिक कृति का मूल्यांकन करते समय आस्वाद न करते समय हम इन बातों का ध्यान रखते हैं। अर्थात् साहित्य का अध्ययन करते समय हम सबसे पहले उसे देश और काल में स्थित करते हैं। उसका स्थान तय करते हैं। उदाहरण के लिए जब हम कबीर का अध्ययन करते हैं तो उनके जुलाहा होने का तथ्य भी सामने रखते हैं। कबीर उस युग में पैदा हुए थे, उस समय में पैदा हुए थे जहाँ ऊँच-नीच की भावनाएं प्रबल थी और सामाजिक मर्यादा के नाम से स्वीकृत हो चली थी। ऐसे समाज के विरुद्ध कबीर ने विद्रोह किया। इस विद्रोह का संबंध उस देश और काल से था। ऐसे ही मीरा मेवाड़ के राजपरिवार की बेटी थी। चित्तौड़ राजघराने की बहू थी। तब वह कुल की मर्यादा को त्यागने की बात करती है तो यह त्याग बड़ा है। यह काल सापेक्ष है। यदि कबीर राज परिवार में पैदा हुए होते या मीरा सामान्य परिवार में जन्म लेती, तो उनका साहित्य अलग तरह का होगा।

साहित्य के सामान्य अध्ययन में जब हम जाते है तो यह बातें हमें मिलती हैं परन्तु जब इनका साहित्य तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में आता है, तब हम देश और काल की इस चेतना को देखना शुरू कर देते हैं। यदि कोई भिन्न दुनिया का व्यक्ति, अलग काल खण्ड में

कबीर और मीरा का पढ़ेगा, तब भी उसमें साहित्यिकता होगी या नहीं होगी और ऐसे ही किसी अलग देश के अलग काल के कवि से जब तुलना होगी, तब उनके मूल्यांकन को क्या नाम दिया जाएगा। जाहिर है कि यह जो अध्ययन है, वह तुलनात्मक साहित्य के अन्तर्गत आता है। इसी तरह जब हम किसी कवि का अध्ययन करते हैं तो उसे एक भाषिक परंपरा में रखते हैं। भाषा की अपनी प्रकृति होती है, अपना सौन्दर्य होता है, अपनी सीमाएं होती हैं। इसी तरह प्रत्येक कृति एक विधा विशेष में होती है। 'गोदान' एक उपन्यास है, 'अतीत के चलचित्र' संस्मरण है, 'अपनी ख़बर आत्म कथा है और 'कामायनी' महाकाव्य है। ये विधाएं इनकी साहित्यिकता की परिधि का निर्धारण करती हैं। कुछ बातों को आत्मकथा में शामिल नहीं किया जा सकता। अतः वह इन बातों को छोड़ देता है। यदि वही लेखक उसी कथ्य पर उपन्यास लिखता तो उसमें शामिल कर सकता था। हर तरह का अध्ययन साहित्य में होता आया है। इस बात की जांच भी चलती है कि विधा विशेष की सीमाएं कृति की सीमा बन जाती है। कई बार लेखक इन सीमाओं को तोड़ते भी हैं। तुलनात्मक साहित्य इन विधागत भेदों की अनदेखी करता है। विधागत सीमाओं के बाद पाठ का अध्ययन इस क्षेत्र में होता है। इसी तरह संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला से सम्बद्ध सीमाओं का अतिक्रमण किया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन को दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि विभिन्न अनुशासनों की भी अपनी मर्यादा से मुक्त होना होता है। अतः कहा जा सकता है कि तुलनात्मक साहित्य सीमाहीन साहित्य का अध्ययन करता है। कोई सीमा साहित्य को विशिष्ट तो बनाती है, परन्तु तब वह तुलनात्मक साहित्य के भीतर नहीं आता। इन सीमाओं के अतिक्रमण के बाद साहित्य में जो पैटर्न बनता है उनका अध्ययन तुलनात्मक साहित्य की सीमा में आता है।

जब तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन आगे बढ़ा तब उपनिवेशों का साहित्य से भी यूरोपीय साहित्य की तुलना करने का प्रश्न उठा। ऐसे में यूरोपीय मनीषा में राष्ट्रवाद की भावना ने पुनः अपना रूप दिखाया। तुलनात्मक साहित्य के यूरोपीय विद्वानों ने यह मत व्यक्त किया कि तुलना सिर्फ समान स्तर के साहित्य में ही संभव होती है। अतः उपनिवेशों के साहित्य से यूरोपीय साहित्य की तुलना नहीं हो सकती। सिर्फ यूरोपीय साहित्य की ही सार्वदेशिक और सार्वकालिक स्वीकृति हो सकती है। उपनिवेशों का साहित्य उस स्तर तक कभी नहीं पहुंच पाएगा। १८३५ में जब लार्ड मैकाले ने कहा कि प्राच्य देशों का साहित्य, चाहे वह भारत हो या अरब का संपूर्ण साहित्य यूरोपीय पुस्तकालय की एक अलमारी में समाहित हो सकता है। मैकाले की इस नस्लवादी, साम्राज्यवादी घोषणा में तुलनात्मक साहित्य के विद्वानों की मान्यता शामिल थी। उमर खैय्याम की रूवाइयों को अनुवाद करने वाले यूरोपीय विद्वान फिट्जराल्ड की भी यही मान्यता थी। जिसके मूल में यह विश्वास था कि यूरोपीय मनीषा श्रेष्ठ है, यूरोपीय साहित्य श्रेष्ठ हैं, जबकि एशिया और अफ्रीका के लोग अभी 'आदिम' और 'बर्बर' हैं। उन्हें अभी यूरोप से सभ्यता सीखनी है। तुलनात्मक साहित्य ने इस समय यह तर्क विकसित किया कि तुलनात्मक अध्ययन पाठ का हो सकता है। मौखिक साहित्य या मौखिक संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन नहीं हो सकता। इसका कारण यह है कि मौखिक साहित्य से लिखित पाठ श्रेष्ठ होता है। इसीलिए मौखिक महाकाव्यों को महाकाव्य नहीं माना जा सकता। पिछड़े समाजों में साहित्य का अधिकांश हिस्सा मौखिक होता है। वह तो गिनती में ही नहीं आता। इसलिए होमर, ग्रीक साहित्य, शेक्सपीयर के नाटक, स्पेंसर तथा मिल्टन की कविता महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पाठ है।

तुलनात्मक साहित्य की यह साम्राज्यवादी समझ सिर्फ मैकाले की ही नहीं है, १९८७ में सी. एल. रेन. (C.L. Wrenn) ने आधुनिकी मानविकी अनुसंधान संघ के अध्यक्षीय भाषण में तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा पर विचार करते हुए कहा "कुछ भाषाएं बहुत संकुचित ढंग से सोचती हैं, जैसे अफ्रीकी भाषाएं यहां तक कि संस्कृति का भी बहुत सीमित महत्व है । अंततः यूरोपीय साहित्य का ही तुलनात्मक अध्ययन हो सकता है ।"

साम्राज्यवादियों का जब एशिया और अफ्रीका में आगमन हुआ तो उनके साथ उनका साहित्य भी आया । भले ही वह सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के तर्कों के साथ जाया । भले ही वह घोषित करके आया कि यूरोपीय ही श्रेष्ठ है परन्तु उपनिवेशों में भी एक नए ढंग का राष्ट्रवाद पैदा हुआ और इस राष्ट्रवाद ने तुलनात्मक साहित्य को नई दृष्टि दी । इस प्रक्रिया में दो नए तर्क आए:-

(१) जैसा यूरोपीय लोगों का साहित्य है, हमारा साहित्य भी वैसा ही है और कई अर्थों में यह यूरोपीय साहित्य से श्रेष्ठ है । इस तर्क के लिए रामायण, महाभारत, वेद पुराण, कालिदास की कृतियां आदि सर्वश्रेष्ठ क्लासिक साहित्य का नया पाठ सामने आया । इस अध्ययन के मूल में उपनिवेशों का नया राष्ट्रवाद सामने आया ।

४.८ सारांश

तुलनात्मक साहित्य एक विशेष पद्धति द्वारा कार्यान्वित होता है । यह पद्धति सचेत और मुलभूत आधारों पर चलती है । इन पद्धतियों के उचित प्रयोग से अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ की दो साहित्य कृतियों का शैली विचार संरचनागत अध्ययन हो सकता है । तुलनात्मक साहित्य अध्ययन प्रविधि में भारतीय संदर्भो में विभिन्न चरणों व तथ्यों को लेकर परिपूर्ण अध्ययन हुआ है । इसमें तुलनात्मक अध्ययन की दिशा और कथ्यमिमांसा साथ ही तुलनात्मक अध्ययन के प्रभाव क्षेत्र और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर विस्तृत चर्चा उक्त इकाई में हुई है ।

४.९ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि पर विस्तार से चर्चा कीजिए ।

२) तुलनात्मक साहित्य की दिशाएँ और कथ्यमिमांसा विद्वानों ने किस प्रकार प्रदिपादित की है । विवरण दीजिए ।

३) तुलनात्मक साहित्य की कथ्य, रूप एवं शिल्प मिमांसा का वर्णन कीजिए ।

४) तुलनात्मक साहित्य अध्ययन के प्रभाव की समीक्षा कीजिए ।

४.१० लघुत्तरीय प्रश्न

१. तुलनात्मक साहित्य प्रविधि के प्रकार

२. तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि – भारतीय संदर्भ में

३. तुलनात्मक अध्ययन की दिशाएँ

४. तुलनात्मक अध्ययन में रूप एवं शिल्प मिमांसा

५. तुलनात्मक अध्ययन का प्रभाव क्षेत्र

४.११ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. तुलनात्मक साहित्य के कितने परिपेक्ष्य माने गये है?

(i) १, (ii) २,

(iii) ३, (iv) ४.

२. किस विद्वान ने प्रभाव को 'अनुकरण' न मानकर 'प्रेरणा' मानने से प्रभाव अध्ययन के विरोध में की गई आलोचना माना है।

(i) रूथ वेन, **(ii) साइमन जियून**,

(iii) क्लांद गुइए, (iv) क्लाइव स्कॉट.

३. तुलनात्मक अध्ययन की भूमिका पुस्तक के लेखक है।

(i) नगेन्द्र, **(ii) प्रो. इन्द्रनाथ चौधरी**,

(iii) हजारी प्रसाद द्विवेदी, (iv) आ. रामचंद्र शुक्ल.

४. भारत में विश्व साहित्य का उल्लेख और उसकी तुलनात्मक दृष्टि की आवश्यकता पर किस विद्वान ने और कब उल्लेखित किया है?

(i) सन् १८४८ में वसंत वापट, (ii) सन् १८९० में डॉ. सरगु कृष्ण मूर्ति,

(iii) सन् १९०३ में इंद्रनाथ चौधरी, **(iv) सन् १९०७ में रवीन्द्रनाथ ठाकुर**.

४.१२ संदर्भ ग्रंथ

१. आय.एन. चंद्रशेखर रेड्डी - तुलनात्मक अध्ययन: निकष एवं निरूपण

२. पंडित चतुर्वेदी - समीक्षा शास्त्र

३. डॉ अनंत केदारे - तुलनात्मक अध्ययन व्यवहारिक कार्य विधि

४. अर्जुन तड़वी - अनुसंधान: सर्जन एवं प्रक्रिया

*****

Turnitin Originality Report

Processed on: 24-Jan-2023 15:43 IST
ID: 1998379720
Word Count: 29519
Submitted: 1

तुलनात्मक अध्ययन (सैद्धांतिक) By Ma,sem-iv,hindi Idol

Similarity Index	Similarity by Source	
2%	Internet Sources:	1%
	Publications:	0%
	Student Papers:	1%

1% match (Internet from 30-Sep-2022)
https://mu.ac.in/wp-content/uploads/2021/10/MA-Hindi-Syllabus.pdf

< 1% match (student papers from 03-Dec-2022)
Class: Quick Submit
Assignment: Quick Submit
Paper ID: 1970112189

< 1% match (student papers from 08-Dec-2022)
Class: Quick Submit
Assignment: Quick Submit
Paper ID: 1975171039

< 1% match (student papers from 17-Aug-2022)
Class: Quick Submit
Assignment: Quick Submit
Paper ID: 1883482442

< 1% match (student papers from 14-Dec-2022)
Submitted to University of Mumbai on 2022-12-14

< 1% match (student papers from 08-Dec-2022)
Class: Quick Submit
Assignment: Quick Submit
Paper ID: 1975162731

< 1% match (student papers from 11-May-2022)
Submitted to Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala on 2022-05-11

< 1% match (student papers from 02-Jul-2021)
Submitted to Rhodes College on 2021-07-02

< 1% match (Internet from 02-Mar-2019)
http://oshodhara.com/Oshodhara/admin/Bookthumb/Samadhi_Ke_Saptdwar.pdf

< 1% match (Internet from 13-Jan-2023)
https://byjusexamprep.com/liveData/f/2022/8/ssc_je_mechanical_2017_held_on_29_jan_2018_shift_1_53.pc

< 1% match (Internet from 21-May-2020)
https://es.scribd.com/document/329433635/Stefan-Kurth-Karsten-Lehmann-Religionen-Erforschen-Kulturwissenschaftliche-Methoden-in-Der-Religionswissenschaft

< 1% match (Internet from 10-Nov-2017)
http://www.universityofcalicut.info/SDE/comparative_literature_hindi_on29sept2015.pdf

< 1% match (student papers from 04-Aug-2022)
Submitted to Lovely Professional University on 2022-08-04

Digital Receipt

This receipt acknowledges that Turnitin received your paper. Below you will find the receipt information regarding your submission.

The first page of your submissions is displayed below.

Submission author:	Ma,sem-iv,hindi Idol
Assignment title:	Quick Submit
Submission title:	□□□□□□□□□□ □□□□□□□ (□□□□□□□□□□□)
File name:	Comparative_Study_-_Theoratical_M.A,_Sem-IV_Hindi_3.pdf
File size:	1.96M
Page count:	59
Word count:	29,519
Character count:	68,259
Submission date:	24-Jan-2023 03:40PM (UTC+0530)
Submission ID:	1998379720

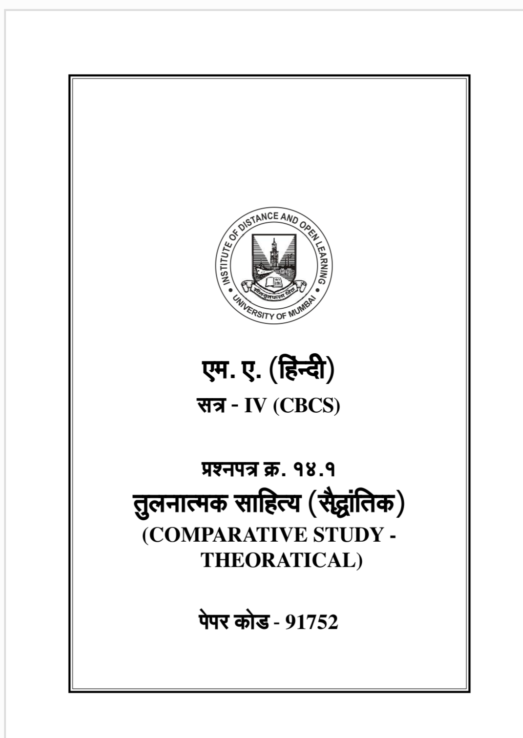

एम. ए. (हिन्दी)
सत्र - IV (CBCS)

प्रश्नपत्र क्र. १४.१
तुलनात्मक साहित्य (सैद्धांतिक)
(COMPARATIVE STUDY - THEORATICAL)

पेपर कोड - 91752

Copyright 2023 Turnitin. All rights reserved.